* हिंसक मोती *

(ले० महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज)

स० सम्पादक—

देवीचरन मीतल

लेखराज नगर, अलीगढ़

—:*:—

सम्पादक, प्रकाशक—

नन्दू भाई

शिव साहित्य प्रकाशन

दयाल नगर, अलीगढ़

मई १९७२ | सर्वाधिकार सुरक्षित | मू०)७५

विषय सूची

"हिंसक मोती"

	भूमिका	
	ईश्वर की आंखें—मुकद्दमा	५
प्रथम अध्याय	जैसे को तैसा	७
दूसरा ,,	आकर्षण	११
तीसरा ,,	आपस में लगाव लपेट की बातें	१४
चतुर्थ ,,	भद्राचल से कूच	१८
पांचवां ,,	मोतीबाई	२२
छटवां ,,	क्रिस्टिया राव	२८
सातवां ,,	पूछताछ और परिणाम	३५
आठवां ,,	अधिक पूछताछ और परिणाम (लगातार)	३९
नवां ,,	पूछताछ और परिणाम ,,	४७
दसवां ,,	लगावट	५२
ग्यारहवां ,,	जगत गुरु	५८
बारहवां ,,	दुबारा जांच और परिणाम	६४
तेरहवां ,,	स्त्री और पुरुष	६९
चौदहवां ,,	,, (लगातार)	७९
पन्द्रहवां ,,	चंडाल चौकड़ी	७४
सोलहवां ,,	अपना काम आप करना	८३
सत्तरहवां ,,	बूढ़ा तेलंगी ब्राह्मण	८९
अठारहवां ,,	मिया शर्फउद्दीन की मृत्यु	९५
उन्नीसवां ,,	मैं भूखी हूँ	१००
बीसवां ,,	लड़की गुम	१०४
इक्कीसवां ,,	अन्तिम निर्णय	१०९
बाईसवाँ ,,	अत्याचार की पराकाष्ठा	११५
तेईसवां ,,	ईश्वरीय न्यायालय	११७
चौबासवाँ ,,	तनकीह जुर्म और फर्द जुर्म	१२४
पच्चीसवां ,,	दया की प्रार्थना और बलिदान	१२९

R.S.

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देव महेश्वरः ।
गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवेनमः ॥

शिव

वर्ष १८	माह जेष्ठ सं० २०२९ वि० मई १९७२	तरंग ३

* चेतावनी *

माई तज दे जग की आसा ।
नर जीवन है अगमा पाई, जल के बीच बतासा ।
गलत देर नहीं लागे माई, सब प्रपंच तमाशा ॥
जो कोई बाँधे आसा जग की, अन्त में रहे निरासा ।
किस की आसा करे तू माई, आसा वाला उदासा ॥
पिंजरे तन में जीव का पंछी बँधा प्रान के सांसा ।
साँस निकलते देर न लागे, निष्फल भोग विलासा ॥
छिन पल में सब जलेगा यह तन, ज्यों चिनगी से घासा ।
इस शरीर की कौन चलावे, जले मेरु कैलासा ॥
गुरु की दया साध की संगति, आनन्द हर्ष हुलासा ।
राधास्वामी नाम को भज नित, माई सांसों साँसा ॥

हिंसक मोती

भूमिका

घटनायें सच हैं। लोगों ने अपनी आँखों से देखा है। देखने वाले अभी तक जीवित है। कई वर्ष अदालती कार्यवाही में लगे। इसको भी लोग जानते हैं लेकिन नाम, स्थान और घर कल्पित है। जान बूझकर उनको कल्पित रक्खा गया है। इसकी आवश्यकता थी। नाविल हमेशा कल्पित लिखे जाते हैं। प्रायः सब बातें लेखक के दिमाग से निकलती रहती हैं, जिससे उनमें दिलचस्पी बढ़ जाती है।

कहानी स्वयं अत्यन्त शिक्षाप्रद और निष्कर्ष पैदा करने वाली है। इससे बहुत सी सभ्यता की शिक्षा ली जा सकती है। जो पढ़ेंगे लाभान्वित हुये बिना न रहेंगे। हमारे लिखने का कारण केवल इतना ही रहता है।

—शिवव्रतलाल

आवश्यक सूचना

जिन ग्राहकों को 'शिव' का कोई अंक न मिले तो उनको तुरन्त लिखकर के डाकखाने में शिकायत कर देनी चाहिये और दूसरा अंक माँगने के लिये मैनेजर 'शिव' पो० दयालनगर जि० अलीगढ़ को पत्र लिख देना चाहिये। मेरे पास इस बारे में पत्र भेजने से उत्तर में और 'शिव' के भेजने में भी देर हो जाती है।

—देवीचरन मीतल

'हिंसक मोती'

'हिंसक मोती' की कहानी पिछले अंकों में छपी है वह अब पृष्ठ १३१ पर समाप्त हो गई है। इसके आगे परमदयाल महाराज के प्रवचन हैं।

उसने फिर उससे कहा—"तुम मुझ निराश्रय विधवा पर जु ढाने आये थे, वह उलट कर तुम पर पड़ा। तुम मुझे पकड़ने आय थे, स्वयं पकड़े गये। पानी लेने वाला नदी में पानी लेने आया था, बाढ़ आई और वह पानी में बह गया। तुमको मालुम है कि इस देश में एक नदी है उसका नाम किन्नर सानी है। किन्नर नाचने वाली को कहते हैं और सानी वैश्या को कहते हैं। यात्री नदी से पार उतरने लगे, पहाड़ का पानी आया, क्षणभर में पेचदार रास्ते से नाचता घूमता हुआ हाथी की तरह आया और उन्हें क्षणमात्र में डुबो दिया। यह दुनियां तुम जैसे आदमियों के साथ ऐसा ही व्यवहार करती है। उस दिन तुम कहते थे कि ईश्वर कोई नहीं है। वह दुखियों की सहायता नहीं करता और न कर सकता है। अब बताओ ईश्वर कोई महान शक्ति है या नहीं। अब भी तुम उसके होने को मानते हो या नहीं ?"

क्रिस्टिया राव ने इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया।

मोतीबाई ने आज्ञा दी—"भाइयो ! इन पकड़े हुये अत्याचारियों को पोच अम्मां के दरबार में ले चलो। वह इनकी सजा तजबीज करेगी। सावधान रहना यह भागने न पावें।"

तेईसवाँ अध्याय

ईश्वरीय न्यायालय

आज्ञा की देर थी। मोतीबाई के मकान के आगे बाजे बजने लगे। कुछ आदमी आगे और कुछ पीछे हुये। बीच में पाँचों कैदियों को कर लिया। इस तरह उनको पकड़े हुये मैदान में ले गये, जहाँ पोच

अम्मां देवी का मन्दिर था। अभी रात बहुत थी। बहुत सी मशालें जल रही थीं।

बाहर के चबूतरे पर चौकी बिछी थी। उस पर आसन पड़ा हुआ था। मोतीबाई उस पर जमकर बैठ गई। सादा वस्त्र सादा रंग ढंग, भोली भाली सूरत ! तेज का साक्षात् रूप। आंखें लाल ! ऐसा मालुम होता था कि कोई देवी आकाश से उतर कर आई है।

चौकी पर बैठकर उसने आज्ञा दी कि अपराधियों को मेरे सामने लाओ। वह लाये गये।

वेंकटेश्वर राव ने पाँचों को कहा—"देवी को नमस्कार करो। यही पोच अम्मां है जो तीन रात आवाज देती फिरी कि मैं भूकी हूँ।"

यह किसी और ख्याल में थे। ध्यान नहीं दिया। वह शायद इस आज्ञा को मानते भी नहीं और माना भी नहीं।"

मोतीबाई क्रिस्टिया राव से बोली—"क्रिस्टिया राव ! क्या तुमको स्वीकार है कि तुमने रामपुर में ऐसे-ऐसे अत्याचार ढाये हैं कि जिनके सुनने से रोंगटे खड़े होते हैं। और उनमें तुम्हारे चार साथी भी शामिल थे ?"

इसने कुछ उत्तर नहीं दिया।

दो मिनट के बाद मोतीबाई ने फिर उससे कहा—"चुप न रहो। या तो स्वीकार करो या इंकार करो वरना यकतर्फ डिग्री दे दी जायगी।"

क्रिस्टिया राव ने कहा—'प्रश्न कर्ता कोई जज या मजिस्ट्रेट नहीं है जो मुझे उत्तर देना पड़े। न यह अधिकार पूर्ण अदालत है न मैं इसे मानता हूँ।"

मोतीबाई—"तुम गलती पर हो। राज के स्थापित कर्त्ता, राजा के बनाने वाले, अदालत की इज्जत मानने और मनाने वाले आदमी ही हैं। तुम नहीं जानते, देवी देवता के प्राण प्रतिष्ठा करने वाले आदमी ही होते हैं। रामपुर के निवासियों ने मुझे इस समय यहां

अदालत की चौकी पर बैठाया है और मैं इन्साफ करने के लि यहां बैठी हूं।"

क्रिस्टिया राव हँसा—"जिन मूर्खों ने तुझे जज बनाया है केवल उनके लिये तेरा कथन उचित है।"

मोतीबाई लोगों से बोली—"भाइयो! मुजरिम को तुम्हारी पंचायत का सम्मान करने से इंकार है किन्तु उसका निरादर कर रहा है। अदालत का अपमान बड़ा अपराध है। पंच परमेश्वर कहलाता है। पंचायत तुम्हारी है तुम पंचायत हो। मैं केवल सरपंच हूं।

सब आदमियों की जुबान से यह शब्द निकल गये—"यह अधम पापी आग में जलाये जाने, पानी में डुबाये जाने, पहाड़ से गिराये जाने और तलवार से बध किये जाने के योग्य हैं।"

क्रिस्टिया राव हँसा—"मुझे कोई कत्ल नहीं कर सकता।'

मोतीबाई—"फिर तुम्हें अपने जुर्म के मानने से इंकार है।"

क्रिस्टिया राव—"स्वीकार और इंकार तो वहां होता है जहां फर्द जुर्म लगाया जाता है। जुर्म कोई नहीं है फिर इकरार इन्कार कैसा!"

मोतीबाई—"मुजरिम ठीक कहता है। अदालत की कार्यवाई नियमानुसार नहीं है। क्या नियमानुसार काम करने पर तुम इकरार इन्कार करोगे?"

क्रिस्टिया राव—"यह अदालत क्या है, हँसी दिल्लगी है।"

मोतीबाई—"मुजरिम ने दूसरी बार भी अदालत की तौहीन की।"

क्रिस्टिया राव—"जब कोई अदालत हो तो उसके मान अपमान का सवाल पैदा हो। यहां तो हँसी है और हँसी हो रही है।"

मोतीबाई—"बस! मुजरिम ने तीन बार अदालत की हतक की। यह बड़ा अपराध है। लेकिन अदालत को रहम का ख्याल है। इसलिये अब नियमानुकूल कार्यवाई करके मुनासिब तनकीह के साथ फर्द जुर्म लगाना चाहिये।"

क्रिस्टिया राव हँसा—"मान न मान ! मैं तेरा महमान !"

मोतीबाई—"क्रिस्टिया राव ! तुम भूले हुये हो। यद्यपि चौथी बार तुमने अदालत की हतक की। शायद फिर भी ऐसा करोगे लेकिन अदालत रहमदिल है। उसका इन्साफ रहमदिली के साथ होगा।"

क्रिस्टिया राव मुस्कराया।

मोतीबाई—"अदालत स्वयं तुमको मुजरिम करार देती है। तुमने केवल दो चार नहीं किन्तु सैकड़ों संगीन और हत्या के जुर्म किये हैं। उनमें से एक नया जुर्म यह है कि तुमने विष दिलवाकर शर्फउद्दीन हाकिम जिला को मरवा दिया। उस हाकिम के बावर्ची से मिलकर खाने में विष मिलवा दिया।"

क्रिस्टिया राव—"यह बिल्कुल गलत है।"

मोतीबाई—'अच्छा ! तुमने इंकार तो किया। अभी तक तो अदालत को तुम हँसी समझ रहे थे। अदालत अब हुक्म देती है कि रंगराव पेश किया जाय ?"

वह सामने लाया गया। मुस्कें कसी हुई थीं।

मोतीबाई ने पूछा—"क्या तुमने क्रिस्टिया राव के कहने से ऐसा नहीं किया ?"

रंग राव ने कहा—"मुझे इंकार है।"

मोतीबाई ने आज्ञा दी—"कागजात सबूत में पेश हों।"

वेंकटेश्वर राव ने कागजों का बंडल लाकर सामने रख दिया।

मोतीबाई ने कहा—"देखो ! यह बावरची का खत है जिसमें रुपया पाने का इकरार है।"

क्रिस्टिया राव के मुँह से निकल गया—"हमारे घर से कागजात चुराये गये।"

मोतीबाई—"मुजरिम को इकरार है कि यह उसके यहां के कागजात हैं। पंचायत उसके इकरार को नोट करले। अब रंग राव

से फिर सवाल है। यह दूसरा नुसखा है जिसमें विष का जिक्र है। जिस दुकान से खरीदा गया उसका नाम.....है। यह रसीद डाक्टर की है जिसे रुपया देकर जुबान बन्द रखने और समय पर मुजरिम के अनुकूल शहादत देने की पेशबन्दी की गई। यद्यपि इस अन्तिम बात का जिक्र इसमें नहीं है।"

रंग राव ने क्रोध भरी दृष्टि से क्रिस्टिया राव की ओर देखा जिसकी बेपरवाही से कागजात चोरी गये।

मोतीबाई—"रंग राव! तुम जाली दस्तखत बनाने में बड़े निपुण हो। तुमने गोदावरी जिले के.....की चैक बुक चुरवाई और उसका जाली दस्तखत बनाकर बैंक से रुपया लिया। यह मामले कभी न कभी प्रगट होंगे, क्या तुमको इन बातों से इंकार है।"

रंग राव—"अदालत मुझ पर रहम करे। मैंने क्रिस्टिया राव के कहने से ऐसा किया।"

मोतीबाई—"पंचायत नोट करले कि क्रिस्टिया राव मुजरिम हैं और उसके साथी रंग राव की गवाही उसे मुजरिम करार देती है। रगराव! तुमने बुरा किया। तुम सख्त मुजरिम हो। लेकिन अदालत तुम्हारे साथ उस समय रहम करेगी जब तुम और मामलों के बारे में सच्ची-सच्ची गवाही दोगे।"

रंग राव—"मैं हर तरह से हाजिर हूं।"

मोतीबाई—"बहुत अच्छा! क्रिस्टिया राव! अब तुम क्या कहते हो?"

क्रिस्टिया राव—"मुझे रंग राव के जुर्म से कोई सम्बन्ध नहीं है। वह जाने उसका काम जाने।"

मोतीबाई—"पंचायत नोट करले। अपराधी पहिले स्वीकार कर चुका है कि यह कागजात उसके यहां के है और अब इंकार करता है। यह जुर्म उस पर सिद्ध हो गया। इसने दो जुर्म कराये। विष दिलाना और चोरी। अब दूसरा नया जुर्म विवाद में आता है।

मुजरिम ने वेंकट राव की लड़की चुरवाई। उसके साथी मेला में से लड़की को बहका कर ले गये। उसका मुँह कपड़े से बन्द कराया गया ताकि शोर न मचावे। वह गोदावरी शहर के..... घर में छुपाकर रक्खी गई। अपराधी की नीयत थी कि अवसर पाकर उसे जबरदस्ती अपनी स्त्री बनाये। क्रिस्टिया राव ! तुमको अपराध स्वीकार है।

क्रिस्टिया राव—'नहीं, बिल्कुल नहीं।"

मोतीबाई—"अदालत आज्ञा देती है कि लड़की उस व्यक्ति सहित पेश की जाय, जिसके घर में छुपाई गई थी।"

दोनों लाये गये।

मोतीबाई—"क्यों बेटी ! तुझे कौन भगा ले गया था।"

लड़की का नाम पचवाबाई था। वह आई। लड़की छोटी अवस्था की थी। उसने कहा—"मुझे रामू बुला ले गया था। मैं पिता जी से मेले में अलग होगई। यह उनके पास ले जाने के लिये ले गया और गोदावरी पहुँचाया।"

मोतीबाई। 'अनजैया ! तुम्हारा क्या बयान है ?"

अनजैया—"रामू लड़की को मेरे पास ले गया। वहां रखने को कहा—क्रिस्टिया राव के मामू की लड़की है पूर्णमासी के बाद वह उससे शादी करने का इच्छुक है।"

मोतीबाई—"तुम क्रिस्टिया राव के कौन हो ?"

अनजैया—"वह मेरा साला है।"

मोतीबाई—"और भी कुछ तुम कह सकते हो। क्या तुम्हारे पड़ौस के लोग जानते थे कि यह लड़की क्यों तुम्हारे घर में लाई गई।"

अनजैया—"रामू ने मुझको ताकीद करदी थी कि जब तक विवाह न हो जाय, किसी को यह भेद प्रगट न होने पावे। विवाह के बाद भेद रखने की आवश्यकता नहीं रहेगी।"

मोतीबाई—"इस भेद को गुप्त रखने के लिये तुमको कुछ रिश्व दी गई थी।"

अनजैया सोच में पड़ गया।

मोतीबाई—"देखो! तुम इस समय पोच अम्मां के दरबार में गवाही देने आये हो। डरना नहीं। असल बात को न छुपाना अन्यथा परेशानी में पड़ जाओगे।"

अनजैया—"रिश्वत नहीं दी गई। मुझे १५०) रु० दिये गये।"

मोतीबाई—"पहिले भी कभी क्रिस्टिया राव ने ऐसी रकम तुमको दी थी?"

अनजैया—"नहीं! मैं उसका गरीब रिश्तेदार हूँ। मैंने समझा कि लड़की के खान पान के बिचार से उसने यह रुपया भेजा होगा।"

मोतीबाई—"क्रिस्टिया राव! कहो क्या कहते हो।"

क्रिस्टिया राव—"यह सब झूँठ है।"

मोतीबाई—"रामू! तुम स्वीकार करते हो या इंकार करते हो।"

रामू—"यह सब सच है। मैं झूँठ न बोलूंगा। क्रिस्टिया के कहने से मैंने यह काम उसी के लिये किया था। गोदावरी के कई आदमी जो अनजैया के रिश्तेदार थे, इस भेद को जानते हैं। रामपुर के आदमी स्वयं उसकी नीयत को जानते हैं।"

मोतीबाई—"जिस दिन पचवाबाई की खोज में वेंकटया शोर मचाता हुआ गया तुम गोदावरी की ओर चले गये थे। बाद को यह सूचना वेंकटया को क्यों नहीं दी?"

रामू—"मैंने अपराध किया था। उसके छुपाने को आवश्यक समझता था।"

मोतीबाई—"आज क्यों स्वीकार करते हो?"

रामू—"भांडा फूट गया। लड़की यहाँ आगई। अब छुपाना व्यर्थ है।"

मोतीबाई—"तुमने अच्छा किया, सच-सच कह दिया। क्रिस्टिया

राव ! अब भी तुमको इंकार है ?"

क्रिस्टिया राव—"अक्षरसः अस्वीकार है।"

चौबीसवाँ अध्याय

तनकीह जुर्म और फर्द जुर्म

मोतीबाई—"क्रिस्टिया राव ! अच्छा होता कि तुम अपराध स्वीकार किये होते।"

क्रिस्टिया राव—"मुझे इन बातों से बिल्कुल इंकार है।"

मोतीबाई—"तुमने सबके सामने स्वीकार किया है कि इन कागजों का बंडल तुम्हारे घर से चोरी गया।"

क्रिस्टिया राव—"रंग राव यह कागज मेरे यहां रख गया था।"

मोतीबाई—"जिनको और इस्तगासा पेश करना हो, वह अदालत के सामने आयें।"

पचासों आदमियों ने उसके सामने आकर अपनी दर्दनाक कहानी शुरू की। किसी ने कहा कि इसने मेरी लड़की का धर्म बिगाड़ा। किसी ने अपनी स्त्री, बहिन का हाल सुनाया। सब लोगों ने सामूहिक तौर पर कहा कि इसने सरकारी अफसरों के बहाने हम से सैकड़ों रुपया लिया। यह पोच अम्मां की पूजा बहाना ही बहाना है। कुल भेंट का रुपया इसके यहां जाता है। पुजारियों को दो चार दस रुपये देकर कुल रकम स्वयं हड़प कर जाता है आदि आदि।

मोतीबाई—'तुम मर्द हो या नामर्द हो, जो अपने घरों की रक्षा नहीं कर सकते थे। एक आदमी और तुम्हारी दुर्दशा करे, तुम्हारा धन दौलत लूटे और तुम हाथ पर हाथ धरे बैठे रहो।"

सबने कहा—"सरकारी अफसर इसके मेल में थे और पुलिस इसके हाथ में है। हम करते भी तो क्या करते! अपनी आँखों देख लिया कि जिसने सिर उठाया, उसी को कुचल दिया।"

मोतीबाई—"खैर! जो होना था वह हो गया। क्रिस्टिया राव! अब भी समय है तुम अपराध स्वीकार करो।"

क्रिस्टिया राव—"यह मेरे विरुद्ध साजिस हैं। जो बातें चन्दा के बारे में कही गई हैं वह सच हैं। मैंने अफसरों के कहने से यह काम किया।"

मोतीबाई—"अपराधी ने अपने अपराध से इंकार किया है। उसे यह ख्याल नहीं है कि यदि इन कागजों का बंडल सरकार आली के सुपुर्द कर दिया गया तो यह बुरी तरह से फँसेगा। मैंने चाहा कि इसे अवसर दूँ। यह पोच अम्मां के दरबार में भी झूँठ बोलने से इंकार नहीं करता। इसके दो साथियों ने इसके विरुद्ध गवाही दी। जुर्म तो साबित हो गया लेकिन यह नहीं मानता और यह आशा नहीं है कि यह अपने जीवन को पलट सकेगा। मैं विवश हूँ। क्रिस्टिया राव! मैं तुम्हारी जज और साथ ही तुम्हारे विरुद्ध गवाह भी हूँ। क्या मैं भी अपनी राम कहानी पंचायत को सुनादूं। वह भी दर्दनाक कहानी है।"

क्रिस्टिया राव—"लड़ाई और प्रेम के मामलों में उचित और अनुचित का सवाल केवल मूर्ख उठाया करते हैं।"

मोतीबाई—"बहुत अच्छा! वेंकटेश्वर! तुम इसकी आमदनी के बही खाते पेश करो।"

वेंकटेश्वर राव ने बड़े-बड़े पोथे लाकर सामने रख दिये। क्रिस्टिया राव की दृष्टि उन पर पड़ी। समझ गया। विरोध कड़ा है। दूसरा आदमी होता तो घबरा जाता। उसने मन को वश में रक्खा।

मुस्कराता रहा।

मोतीबाई—"अपराधी अपराध करते-करते कठोर हृदय हो गया है। इन बही खातों से प्रगट है कि वह कभी-कभी घर से गायब रहा है। उस समय में यह बाहर जाकर लूट पाट करता रहा है। रेलवे लाइन के खुलने पर यह खुली हुई माल गाड़ियों पर छुपकर बैठे रहता था। कभी-कभी इसके चारों साथी भी साथ रहते थे और कभी-कभी अकेला रहता था। रेल के बाबू इससे मिले हुये थे। यह सड़कों पर नाज के बोरे के बोरे सड़कों पर लुढ़काता जाता था। इसके आदमी उठा ले जाते थे। इस काम में बहुत लोग शामिल थे। हर जगह के मारवाड़ी इसके साथी बने हुये थे। वह सस्ते दामों पर नाज ले लिया करते थे। इस तरह इसके हाथ बड़ी रकम लग जाती थी। इन बही खातों में वह रकमें शामिल हैं। कहो क्रिस्टिया राव! यह खाते तुम्हारे हैं या किसी और के?"

क्रिस्टिया राव—"बही खाते तो मेरे अवश्य हैं। इससे इंकार नहीं है। सिवाय अनुचित ढंग के उनका हाथ आना कठिन था। जिसने ऐसा काम किया है वह चोर है।"

मोतीबाई—"चोर हो या डाकू हो, इस पर बहस नहीं है। बहस तो यह है कि यह तुम्हारे हैं या नहीं। तुम स्वीकार करते हो। अदालत को खाना तलाशी करने का अधिकार है। इसलिये सबूत में यहां पेश की गई हैं।"

क्रिस्टिया राव—"इससे और क्या सिद्ध करना चाहती हो?"

मोतीबाई—"इनमें जगह-जगह मारवाड़ियों के नाम आये है, जो तुमसे नाज, कपड़ा और चोरी के माल लेते थे। रेलवे बाबुओं तक के नाम तुमने याददास्त के लिये लिख रक्खे हैं। साथ ही कहीं-कहीं मालगाढ़ी पर तुम्हारे चढ़कर बोरों की संख्या गिराने का संकेत है।

अदालत ने पहिले ही से इनको देख लिया है। और जाँच किये जाने पर बहुत से आदमी पकड़े जा सकेंगे। अदालत इनके द्वारा तुम्हारा अपराध साबित करना चाहती है। इन घटनाओं के देखने वाले गवाह तक हाजिर किये जा सकते हैं।"

क्रिस्टिया राव चुप रहा।

मोतीबाई ने नरसिंघेलू और शामलू की ओर देखा—"क्या तुमको क्रिस्टिया राव के साथ शामिल होने से इंकार है ?"

दोनों ने हाथ जोड़कर कहा—"हम पर दया की जाय। हमने यह सब काम किये है। अदालत ने अच्छी तरह हर बात का पता लगा लिया इसलिये यदि हम लाख इंकार करें तो अब कुछ न होगा। यह हम समझ गये हैं। केवल हम दो आदमी ही क्रिस्टिया राव के हाथ में औजार के रूप में नहीं थे किन्तु रामू और रंग राव भी शामिल थे।"

मोतीबाई हँसी—"अदालत उनको अलग नहीं करती। तुम चारों ने अपराध स्वीकार कर लिया है इसलिये यदि मन से प्रतिज्ञा करो कि आगे के लिये तुम नेक राह पर चलोगे और फिर किसी बुराई का काम न करोगे तो अदालत तुम्हारे साथ अवश्य दया का व्यवहार करेगी।"

क्रिस्टिया राव ने देखा कि उसके चारों साथी बेबफा निकल गये फिर भी उसके त्यौर नहीं बदले।

मोतीबाई—"क्यों क्रिस्टिया राव ! अब तुम क्या कहते हो ?"

क्रिस्टिया राव—"कुछ नहीं, जो मैंने पहिले कहा उसी पर स्थित हूँ।"

मोतीबाई—"याद रक्खो, पाप का घड़ा भर गया है और छलक रहा है।"

क्रिस्टिया राव—"मैं अपने आपको कुकर्मी नहीं कहता।"

मोतीबाई—"क्या अच्छा होता कि यदि यह धैर्य और दृढ़ता भलाई के कामों में होती तो तुम सम्मान योग्य मनुष्य होते। तुमने जान बूझकर बुरा रास्ता पकड़ा इसलिये अदालत तुमको घृणा के योग्य करार देती है।"

क्रिस्टिया राव—"मैं अदालत को अदालत नहीं समझता।"

मोतीबाई—"तुम्हारे समझने या न समझने से अब कुछ नहीं हो सकता। पहिले तो तुम स्वीकार और अस्वीकार करने से कतराते थे। अदालत ने तुमसे इंकार भी करा लिया और इकरार भी करा लिया।"

क्रिस्टिया राव—"मैंने कुछ नहीं किया।"

मोतीबाई—"तुमने स्वीकार भी किया और अस्वीकार भी किया। तुमको स्वीकार है कि कागज के बंडल तुम्हारे घर में थे। यह रसीद बहियां और बही खाते सब तुम्हारे हैं। इनसे तुम्हारा जुर्म साबित होता है बाकी और बातों से तुम्हें इंकार है। उनका प्रमाण रामपुर वालों की गवाही है और स्वयं तुम्हारे साथियों ने सिद्ध कर दिया है कि तुम अपराधी हो इसलिये अब तनकीह को अधिक लम्बा करना स्वीकार नहीं है।

मोतीबाई यह कहकर उठी। पोच अम्मां के मन्दिर में गई। लाल वस्त्र पहिने और दोनों भौंओं के बीच में लाल टीका लगाकर हाथ में एक डंडा लिये हुये बाहर निकली। उस समय उसकी सूरत देखने के योग्य थी। आंखें चढ़ी हुई! माथा तेज से चमकता हुआ! वस्त्र और डंडा मसलहतन पहिले ही से मन्दिर में रख दिये गये थे।"

वह रौब दौब से चौकी पर आकर बैठ गई और पंचायत से कहने लगी—"भाइयो ! क्रिस्टिया राव तुम्हारा अपराधी है। इसका अपराध सिद्ध हो गया। देवी भूकी है। तीन रात वह बराबर आवाज देती रही। बलिदान किये गये। इससे तृप्ति नहीं हुई। रात बीत गई। सूर्य की लाली फूट रही है। ले जाओ इस बकरे को। पहिले स्नान कराओ और फिर इसी जगह लाकर बलिदान चढ़ाओ ताकि तुम्हारी देवी तुमसे प्रसन्न हो।"

पच्चीसवां अध्याय

दया की प्रार्थना और बलिदान

अब जाकर क्रिस्टिया राव की आंखें खुलीं कि रामपुर वालों की क्या नीयत है। क्षणमात्र में उसका साहस टूट गया। अकड़ समाप्त हुई। अब तक वह इस अदालत और उसके फैसले को कुछ का कुछ समझ रहा था। मोतीबाई की आज्ञा पाकर पांच सात आदमी उसे पकड़ ले गये। पास में तालाब था। उसमें गोता दिया और मन्दिर के सामने लाकर खड़ा कर दिया। मोतीबाई अब तक अपने स्थान पर बैठी रही।

क्रिस्टिया राव ने पूछा—"मेरे साथ क्या व्यवहार होगा।"

मोतीबाई ने उत्तर दिया—"जो व्यवहार तुमने दूसरों के साथ किया है।"

क्रिस्टिया राव—"मैंने तो कुछ नहीं किया।"

मोतीबाई—"तो अब भी कुछ नहीं किये जाओगे।"

क्रिस्टिया राव—"दया करो।"

मोतीबाई—"जिस पुल से तुमको जाना था, तुमने स्वयं ही तोड़ दिया। अब तो मुँह के बल मृत्यु की गहरी नींद में तुमको डूबना पड़ेगा।"

.....

मोतीबाई का हटना बलिदान करने का संकेत था। जितने पुरुष वहां खड़े थे उसका संकेत–कुम्बी, इल्मा, धेड़,धोबी, नाई आदि को था जिनको उनसे शिकायत थी। भिन्न-भिन्न हथियारों से एक साथ उस पर टूट पड़े और क्षणभर में उसकी बोटी-बोटी करदी और क्रिस्टिया राव का जीवन इस तरह समाप्त हो गया।

इसके बाद लकड़ियों का ढेर लगाया गया। उस पर उसके शरीर के कुल टुकड़े इकट्ठे करके रख दिये गये और आग लगादी गई। उसकी लाश भस्म होगई।

रामू, शामलू, रंगराव और नरसिंघेलू ने इस दृश्य को अपनी आँखों से देखा। वह डरे हुये थे कि कहीं उनके साथ ऐसा ही व्यवहार न हो क्योंकि वह अब तक बँधे हुये खड़े थे।"

जब लाश जल गई, मोतीबाई ने मन्दिर से बाहर आकर आज्ञा दी—"इन कैदियों को छोड़दो इनको अधिकार है चाहे जहां जांय। इनको हिदायत के लिये सबक मिल गया। यदि यह अब भी न सभलेंगे तो कुदरत स्वयं इनको दंड देगी। वह छोड़ दिये गये। तब उनकी जान में जान आई। मोतीबाई ने गांव वालों को हिदायत की—"सरकार इस कत्ल की जांच करेगी। तुम कुछ न कहना। जब जाँच हो सब के मुँह से यह शब्द निकले कि हमने इसे मारा है। और तुम जान से बच जाओगे।

परिपूरक

मोतीबाई की भविष्य बाणी के अनुसार जब इस घटना की सूचना पुलिस वालों को मिली वह घटना स्थल पर पहुँचे। कुल गाँव ने मिल कर कत्ल करना स्वीकार किया बहुत से आदमी शुभा में पकड़े गये। महिनों मुकदमा चलाया गया। हाईकोर्ट तक पहुंचा। दो तीन बार नजरसानी और अधिक जांच के लिये मुकदमा वापिस आया। खुफिया पुलिस तफतीश करती रही लेकिन हजारों आदमी यही कहते रहे कि हम सबने मिलकर इसे मारा है क्योंकि यह दुराचारी और अत्याचारी था।

अन्त में हाईकोर्ट ने मजबूर होकर सबको छोड़ दिया।

(२) पुलिस कागजों के बंडल नोटों सहित लेगई। शर्फउद्दीन की लाश कब्र से नहीं खोदी गई, क्योंकि उसके अब तक सड़ गल जाने का ख्याल था। बैंक में चैकों के दस्तखत जाली निकले और उसको हानि उठानी पड़ेगी क्योंकि कुल नोट बंडल में नहीं निकले।

(३) चंडाल चौकड़ी के चारों आदमी भाग गये। खोजा तो बहुत गया लेकिन उनका पता न लगा।

(४) मोतीबाई भी इस घटना के बाद रामपुर से लोप होगई और आज तक कोई नहीं जानता कि वह कहाँ और किधर गई। रामपुर वालों के मुँह पर उसका नाम नहीं आया। सबने उसे छुपा रक्खा था।

(५) अब रामपुर में शान्ति है। किसी को अत्याचार करने का साहस नहीं होता। क्रिस्टिया राव व उसके अत्याचारों के जिक्र अब तक कभी-कभी हुआ करता है।

॥ हिंसक मोती समाप्त ॥

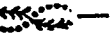

परमदयाल जी महाराज का

(अमरीका यात्रा का वर्णन वहां से लौटने पर)

प्रवचन

गुरु कहें पुकार पुकार, समझ मन करलो सुमिरनियां ॥
स्वांसों स्वांस घटे तेरी पूँजी, चली जाय यह उमरनियां ॥
वक्त मिला यह तख्त नशीनी, छोड़ बान अब घुरबिनियां ॥
यह मारग अब गुरु बतावें, पकड़ गहो तुम उरधुनियां ॥
शब्द संग तुम सुरत लगाओ, रहो नित गुरु मुजरनियाँ ॥
दया लेऊ तुम हरदम उनकी, शरण पड़ो उन चरननियाँ ॥
वह तो भेद बतावें घट का, पकड़ शब्द भव तरननियां ॥
लागी लगन बहुरि नहिं सूझे, सुरत अजर में जरननियां ॥

इन बाणियों ने मुझे जीवन भर दीवाना बना रक्खा। अब मैं बाणी को समझता हूँ। दुनियां की ओर से वैराग हो गया है। शारीरिक अंग दुर्बल हो गये हैं। पूर्ण गुरु की खोज में मैंने अपने जीवन का बहुत सा समय व्यतीत किया किया है। मुझे इस भेद का पता नहीं लगता था। महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज ने मुझे यह भेद देने के लिये यह काम दिया था। मैं समझता हूँ कि किसी का कल्याण करने वाला कौन हूँ। हां. इस करम से मेरा अपना कल्याण होगया।

अब मैं अमरीका गया। क्यों गया ? उसका कारण डाक्टर आई० सी० शर्मा है। पहिले तो मुझे पता नहीं था लेकि अब पता लगा है डाक्टर शर्मा पी० एच० डी० है। संस्कृत और फिलोस्फी में एम० ए० है। चूंकि वह वेदों को पढ़ा करता था इसलिये उसमें परमार्थ और सांसारिक उन्नति का विचार उत्पन्न हुआ। उसके अन्तर मेरा रूप प्रगट हुआ और उस रूप ने उससे कहा कि तेरा काम बन गया !

सन् १९५९ ई० में मैं दशहरा पर देहली सत्संग करा रहा था. उस समय डा० शर्मा ने मुझे देखा और सत्सग के बाद मेरे पास आया। कहने लगा कि आप सन् १९५२ में मेरे अन्तर प्रगट हुये थे। मैंने उससे कहा कि मैं तो किसी के अन्तर नहीं जाता। सन् १९६५ ई० की बात है जब यह अमरीका जा रहा था तो मुझ से मिला। मैंने इसको कहा कि सुमिरन ध्यान किया करो और मेरी कुछ पुस्तकें साथ ले जाओ, इनको पढ़ते रहना। यह तुम्हारी सहायता करेंगी। चूँकि इसका मुझ पर विश्वास बैठ गया था इसलिये उसने अमरीका में योग के प्रेमियों से मिल मिलाकर मुझको अमरीका बुलाने का प्रबन्ध किया था।

राधास्वामी मत और कबीर मत की बाणी में जोर दिया हुआ है कि पूर्ण गुरु की तलाश करो। इस बाणी में आया है कि गुरु भेद बता देता है। अब यह भेद आप लोगों को बता रहा हूँ कि सन् १९५२ ई० में मैं डा० शर्मा के अन्तर नहीं गया।

अमरीका में कई आदमियों के अन्तर मेरा रूप प्रगट होता है। मेरे अमरीका जाने से कुछ समय पहिले एक आदमी ने डा० शर्मा से कहा था कि अमुक तारीख को बाबा फकीर अमरीका को आयेंगे लेकिन मुझे इन बातों का कोई पता नहीं है।

डा० शर्मा के पास एक आदमी की चिट्ठी आई। उसने लिखा कि मैं बाबा फकीर के सत्संग में गया। उनके चहरे और आँखों से ज्योति निकल रही थी। उनको देखते ही मेरी समाधि लग गई। फिर समाधि में बाबा जी प्रगट हुये और मुझे एक कहानी सुनाई।

यह जो कुछ मैं कह रहा हूँ क्या यह नई बात नहीं है? क्या किसी महात्मा ने आज तक स्पष्ट वर्णन किया है? सैन बैन (संकेत) तो सबने किया है। तुम्हारा मन ही सच्चा साथी है। तुम्हारा मन ही तुम्हारा शत्रु है। जिस प्रकार की प्रबल इच्छा किसी के अन्तर होती है, उसको पूरा करने के लिये मन ही उसकी सहायता करता है।

कोई बाबा फकीर, राम या कृष्ण या कोई देवी देवता बाहर से तुम्हारी सहायता के लिये नहीं आता है। यह भूल और भ्रम है। इसी भूल के कारण मानव जाति विभिन्न धर्म सम्प्रदायों में बँट गई और एक को दूसरे से घृणा द्वेष पैदा हो गया।

अभी थोड़े दिनों की बात है। समाचार पत्रों में लोगों ने पढ़ा होगा कि एक आदमी के अन्तर उसके बाप ने जो बहुत समय पहिले मर चुका था, कहा कि तुम लोगों पर देवी क्रोधित है। तुम अपने तीनों लड़कों की बलि देदो। देवी प्रसन्न हो जायगी और मैं भी प्रसन्न हो जाऊँगा। उस मूर्ख ने उसको सचमुच अपना बाप समझा और अपने तीनों लड़कों की बलि देने लगा। दो बड़े लड़के तो उसके हाथ से निकल गये और बच गये। बेचारा तीसरा मारा गया। उसके अन्तर जो रूप आया था क्या वह उसका बाप था। वह तो उसका अपना ही मन था। जिस प्रकार के आदमी के अन्दर विचार होते हैं वही रूप बनकर उसके सामने आ जाते हैं।

दातादयाल जी ने मुझे कहा था कि फकीर ! समय बदल जायगा। चोला छोड़ने से पहिले शिक्षा को बदल जाना। मेरे अन्तर भी यह ख्याल रहता था कि मैं इस शिक्षा को कैसे बदलूँ और इस ज्ञान को कैसे फैलाऊँ, जिसके आधार पर स्वामी जी महाराज ने सब मत मतान्तरों तथा वेदान्त को भी काल और माया मत में बताया है और अपने मत को सबसे ऊँचा कहा है। मैं अपने आप तो राधा-स्वामी मत में आया नहीं था। जैसे डाक्टर शर्मा के अन्तर मेरा रूप प्रगट हुआ था ऐसे ही सन् १९०५ ई० में दातादयाल महर्षि शिव-ब्रतलाल का रूप मेरे अन्तर प्रगट हुआ था। चूँकि मैं सचाई का जिज्ञासू था इसलिये कुदरत ने मेरा वहां मेल करा दिया।

क्या संत मत या कबीर मत ही ठीक मत हैं और शेष सब गलत हैं ? इसको हल करने के लिये मैंने जीवन बिता दिया। अब मैंने इस शिक्षा को समझा है और मैं उसके प्रचार की कोशिश करता

रहता हूं। अमरीका में लोगों ने मेरी बहुत प्रशंसा की कि आपका रूप हम लोगों के अन्तर प्रगट होता है और तरह-तरह की बातें बताता है और हमारे काम करता है लेकिन मैंने उनके सामने सचाई वर्णन की कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। यदि मुझे भी रुपया इकट्ठा करना होता तो मैं भी इस बात को पर्दे में रखता और दूसरे डेरों की तरह बहुत बड़ा डेरा बना जाता।

अब मैं बूढ़ा हो गया हूँ। आप लोग आये हैं। आपको एक बात कहना चाहता हूँ।

मन के मते न चालिये, मन के मते अनेक।
जो मन पर असवार है, सो साधु कोई एक॥

मन के आवेश में आकर मत बह जाना। इसके लिये पूरे गुरु की आवश्यकता है ताकि तुम अपने जीवन की घटनाओं और तजुर्बों को समझ जाओ। कितनी बार तुमको सीधे रास्ते पर ले जाता है और कितनी ही बार कुमार्ग पर भी ले जाता है। यदि तुमको गुरु मिला हुआ है तो उसकी आज्ञा मानने से तुम उससे बच जाओगे। इसलिये राधास्वामी मत में पूरे गुरु के लिये जोर दिया जाता है। चूँकि मन चचल है इसलिये इसको काबू करने के लिये मन को कोई न कोई साधन दिया जाता है चाहे राधास्वामी नाम का हो, चाहे राम नाम का हो, चाहे अल्लाहू का हो। अपने-अपने मत के अनुसार साधन करो।

लोग कहते हैं कि संतों में बहुत शक्ति होती है। होती होगी लेकिन मैं कहता हूँ कि यदि संतों मे शक्ति थी तो जितने संत बीमार रहे वे अपनी बीमारी दूर कर लेते। यही बात मैंने अमरीका में कही थी कि यदि ईसामसीह में शक्ति थी तो जिन्होंने उनको फाँसी दी, उनके मन को उन्होंने क्यों न बदल दिया? यही रहस्य है जिसको संतों ने पर्दे में रखकर दुनियां को मूर्ख बनाया हुआ है। गुरु ने तुमको सच्चा रास्ता बताना है तुम्हारे भ्रमों को दूर करना है। बाकी जो

कुछ तुमको मिलता है वह तुम्हारे कर्मानुसार मिलता है।

अमरीका में डाक्टर लोग बहुत धनी हैं। वहां एक डाक्टर के अन्तर मेरा रूप प्रगट हुआ। उसकी स्त्री का नाम 'जीन' है। जब उसने अपनी घटना मुझे बताई तो मैंने डाक्टर से साफ कह दिया कि मैं तुम्हारे अन्दर नहीं गया। यह तुम्हारा अपना ही मन और अपना ही विश्वास था। उस डाक्टर ने अपनी स्त्री से कहा कि तुम मेरे खाने पीने की चिन्ता मत करो। जब तक बाबा जी अमरीका में हैं उनके साथ रहकर उनकी हर तरह से सेवा करो। उनको कोई कष्ट न हो।

अब वह लोग यहाँ आना चाहते हैं। मैंने कहा कि मेरे पास आप लोगों को ठहराने के लिये उचित स्थान नहीं है। यदि एक दो शीत-वातानुकूल (air-Conditioned) कमरे बना सका तो फिर आप लोगों को लिखूंगा। वह लोग वहां एक 'मानवता कालोनी' बनाना चाहते हैं। जो आदमी बनाना चाहता है उसने अपने लड़के का नाम 'राम' रक्खा है और वह उसको भारतवर्ष में किसी गुरुकुल में शिक्षा दिलवाना चाहता है।

तुम लोग मेरे पास आये हो। मैं अपनी जिम्मेदारी को महसूस करता हूँ, इसलिये आप लोगों से यह कहना चाहता हूँ कि यह मनोमय जगत है अतः अपने मन में अच्छे विचार रक्खो। जो कुछ तुम चाहते हो उसकी अपने मन में प्रबल इच्छा रक्खो। कुदरत उसको पूरा करने के लिये कोई न कोई साधन अवश्य बनायेगी, जैसे मेरा बनाया अथवा डाक्टर शर्मा का बनाया। कुदरत में मांग और पूर्ति का नियम काम करता है। अपनी चाह को प्रबल रक्खो। वह पूरी हो जायगी। यदि परमार्थ चाहते हो तो पारब्रह्म और शब्दब्रह्म को पकड़ो। हमारे ऋषि इसीलिये ९ वर्ष के बच्चे को गायत्री मंत्र का पाठ दे दिया करते थे। मैंने वहां एक अमरीकन को गायत्री मंत्र का पाठ करते देखा। वह खुश भी है। उसकी स्त्री वहां किसी योगाश्रम

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL

में पढ़ाती है। वहां पर मैंने कई अमरीकन देखे जो साधु बने धोती पहिनते हैं और 'हरे राम' का कीर्तन करते हैं।

संत कहते हैं कि यदि तुम संसार से पार जाना चाहते हो तो शब्द का साधन करो। लेकिन संतों के पास इसका प्रमाण क्या है? इसलिये मैं मालिक से प्रार्थना किया करता हूँ कि ऐ मालिक! मुझे अवसर दे कि मैं शरीर छोड़ने के बाद यह बता सकूँ कि मैं कहां गया।

यदि मरने से पहिले तुम्हारा सम्बन्ध अपने बाल बच्चों या रिश्तेदारों से या राम या कृष्ण से या गुरु से हैं तो तुमको दूसरा जन्म अवश्य लेना पड़ेगा क्योंकि यह सम्बन्ध मन से है और यह जगत भी मनोमय है अर्थात् जिसको तुम अपने अन्तर में प्रेम करते हो वह तो तुम्हारे अपने मन ने बनाया हुआ है। दूसरे शब्दों में तुम्हारा मन अपने ही आप से प्रेम करता है। यदि यह समझ आ जाय तो दुनियां में जाति भेद समाप्त हो जाय लेकिन यह तब होगा जब मुसीबत आयेगी और लोगों को होश आयेगा कि हमको क्या करना चाहिये था और हमने क्या किया है। जमींदार थोड़ी सी जमीन के लिये झगड़ा करके सब कुछ गँवा देता है। फिर लोग अफसोस करते हैं। ऐसे ही देश वालों और सम्प्रदायों की दशा है। मेरे पास मेंटलसाइकोलोजी है। मैं कहे जाना चाहता हूँ कि मानव जाति में विनाश अवश्य होना है। इसको कोई रोक नहीं सकता। जो जो कर्म किये हैं वह भोगने पड़ेंगे। इसलिये संत कहते हैं कि शब्दब्रह्म को पकड़ो। यही गरुड़ पुराण कहता है कि यदि आवागवन से बचना चाहते हो तो गायत्री मत्र का सुमिरन करके और गुरु मूर्ति का ध्यान करते हुये पारब्रह्म और शब्दब्रह्म से परे जाओ। लेकिन जब तक शब्द और प्रकाश नहीं खुलता तुमको साकार की भक्ति करनी पड़ेगी क्योंकि निराकार की भक्ति करने वाले का मन कभी एकाग्र नहीं होता। मन को एकाग्र करने के लिये सहारा चाहिये। इसीलिये

मन्दिर, मसजिद और गुरुद्वारे बनाये गये हैं। मुझे याद है कि दशहरा के अवसर पर जिस लड़के को राम बनाया जाता था मैं उसको असली राम समझकर आनन्द लिया करता था।

सन् १९०५—६ की बात है कि दो वर्ष नौकरी करने के बाद मैं बेकार था। स्त्री बीमार थी। दशहरा का दिन था। मैंने अपनी मां से रामचन्द्र जी को फूल और भेंट चढ़ाने को आठ आने पैसे मांगे। उसने कहा कि अपने बाप से लेलो। मैंने उनसे कहा। वह कहने लगे कि दो पैसे ले जाओ। एक पैसे के फूल चढ़ादो और एक पैसा भेंट दे देना। मैंने आठ आने के लिये हठ की। अन्त में पिता जी ने मुझे बहुत धमकाया और बुरा भला कहा। मैं रोने लगा। फिर उन्होंने समझाया कि हम गरीब हैं। मेरी स्त्री ने मुझे बुलाकर कहा कि मैंने एक-एक पैसा जोड़कर पचास रुपये जमा किये हैं। यह चाबी ले लीजिये और निकाल लीजिये। मैंने इंकार कर दिया।

मेरे पास एक किताब थी। उसे आठ आने में बेचकर चार आने के फूल और चार आना रखकर रामचन्द्रजी को माथा टेका। शाम को जब घर आ रहा था तो मैंने प्रार्थना की कि हे राम! जीवन में किसी के आगे हाथ न फैलाऊँ। मैंने जीवन में किसी की कमाई नहीं खाई। आवश्यकता पड़ने पर नौकरी के साथ-साथ भट्टे की ईंटें निकाली मगर किसी के आगे हाथ नहीं फैलाया। युवको! तुमको सबक सीखना चाहिये। अपने पांव पर खड़े होने की कोशिश करो।

यही शिक्षा मैंने अपने छोटे भाई रायसाहब सुरेन्द्रनाथ को दी थी। उसने मुझे पत्र लिखा कि पिता जी ने मेरी शादी नियत करदी है। मैंने उसको लिखा कि अपने रुपये से शादी कराओ। इसने शादी की तारीख रद्द करदी और उसके पास रुपया होगया तब शादी कराई।

अब मैं ८५ वर्ष का हो गया हूं। मुझे जितना समय मिलता है मैं शब्द में रहता हूँ। एक और बात आपको समझाये देता हूं कि जो

काम हम अपनी गरज के लिये करते हैं उनके अक्स या चिन्ह दिमाग पर बैठे जाते हैं इसलिये यह रेल तार अभी तक मेरे दिमाग से निकलते नहीं क्योंकि इसमें मैंने नौकरी अपने पेट के लिये की थी। मानवता मन्दिर कभी मेरे स्वप्न में नहीं आता क्योंकि उससे मेरी कोई निजी गरज नहीं है। जो कुछ मुझे आप लोगों के अनुभवों से मिला वह आपको लौटा रहा हूँ।

प्रवचन

परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

(मानवता मन्दिर होशियारपुर १४—४—७२ प्रातः)

मैं अपने आपसे सवाल करता हूँ कि फकीरचन्द ! यह क्या पाखंड का जाल बनाया हुआ है। लोग तुम्हारे पास आते हैं और कहते हैं कि प्रशाद करदो। मैं कर देता हूं। अब मैं सोचता हूँ कि क्या मेरे प्रशाद से किसी को लाभ पहुँचता है ? कम से कम १७५ स्त्रियों को मेरे प्रशाद से बच्चे हुये हैं। उनमें २—३ स्त्रियां तो ऐसी है जिनको २०-२० वर्ष से मासिक धर्म भी नहीं होता था लेकिन मेरी लड़की की शादी को १७—१८ वर्ष हो गये उसके कोई बच्चा नहीं है। जब से ऐसी घटनायें मेरे सामने आईं तो मैं सोचता हूँ कि तूने क्या किया ? मुझे बचपन से यह लगन थी कि मेरा मालिक कहां है ? मैं कहां से आया हूं ? और मेरा आदि अन्त क्या है ?

यह विचार मनुष्य के अन्तर क्यों पैदा होते हैं ? जब हम सोचते हैं कि कहां गये महर्षि जी ! कहां गये बाबा सावनसिंह ! कहाँ गये गाँधी जी ! कहाँ गये राम और कृष्ण ! तो किसी को चाहे यह विचार न आये मगर मेरे दिमाग में यह बात आती है कि यह

दुनियां है क्या ?

प्रेमी लीजो रे सुधि घर की, गुरु संग शब्द कमाय।

हुजूर महाराज (राय सालिगराम साहब) भी मेरे जैसे दीवाने थे। उनको भी मेरी तरह यह खोज थी कि मेरा आदि घर कहां है। वह कहते हैं कि यदि तुम अपने आदि घर का पता करना चाहते हो तो गुरु के संग बैठकर शब्द की कमाई करो।

मैंने गुरु के साथ बैठकर शब्द कैसे कमाया ? मैं गुरु की संगत में गया था। मुझे अपने घर का पता नहीं लगता था क्योंकि मैं तो मन के चक्र में आया हुआ था।

दातादयाल का रूप मेरे अन्तर आ जाता तो मैं बहुत खुश होता। छोटी उम्र में मेरी यह दशा थी कि राम धनुष लेकर मेरे आगे आगे चलते थे और कृष्ण बंशी बजाते हुये मेरे आगे-आगे दौड़ा करते थे। मैं उनके पीछे-पीछे दौड़ा करता था। उस समय में दीवाना था। फिर दातादयाल महर्षि शिवव्रतलाल जी ने मुझे नाम दिया और आदेश दिया कि अन्तर चलो। मैंने बहुत अभ्यास किया। बीन सुनी, शब्द सुने और इतना प्रकाश देखा कि जिसका कोई हिसाब नहीं। लेकिन जब तक मैं उस अवस्था में रहा और फिर जब नीचे आया अर्थात् उस अवस्था के बाद तो फिर किसी वस्तु की खोज शुरू हुई। अब मुसलमान पीर कादरी साहब यह कहते हैं वह नूर या प्रकाश में रहते है, प्रकाश में मुझे देखते हैं। ठीक है मगर क्या उनको सांसारिक आवश्यकतायें तंग नहीं करती हैं। उपदेश करना एक और बात है और क्रियात्मक जीवन बिताना और है। मैंने भी गुरु का संग किया मगर बाद में फिर गिर गया।

दातादयाल जी ने आज्ञा दी कि फकीर ! संतान पैदा करो। क्या मैं सन्तान के लिये स्त्री के पास गया था। मैं तो काम भोगने को स्त्री के पास गया था। सोचता हूँ कि शब्द के सुनने से मैं क्या बन गया। इसलिये कहता हूं कि यह महात्मा जो सुरत शब्द योग की

शिक्षा देते हैं यह सोचें कि मैं क्या कह रहा हूँ। इस एक ख्याल से कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता मेरा जीवन पलट गया, मेरा दिमाग बदल गया।

गुरु ने मुझे यह ज्ञान दिया कि मैं कौन हूं और कहां से आया हूँ। मैं वहाँ से आया हूं जो कि—

"अकह अपार अगाध अनामी। वह है मेरा देश अकामी ॥"

मैं ही नहीं आप सब लोग वहाँ से आये हो मगर आप लोगों को अपने घर का पता नहीं है। अपने घर का पता गुरु ने बताना है, जो अपने घर जाने के लिये गुरु के पास जाते हैं। तुम लोग तो दुनियावी चीजों के लिये मेरे पास आते हो। दातादयाल ने मुझे लिखा था—

खेल खिलाऊँ सुगम सुहेला, सुरत शब्द मत गाऊँ।
काल हिंडोले से तू बाचे, विधि विचित्र बतलाऊँ ॥

वह क्या विचित्र विधि बतलाई ?

कर सत्संग विवेक से गुरु का, गुरु दयाल हितकारी।
साधू बनके साधले युक्ति, जा भूले से पारी ॥

अभ्यास करते समय मैंने बहुत दृश्य देखे—मानसरोवर, फूल आदि। अब मालूम हुआ कि वह जो कुछ मैंने देखा वह सब माया थी। यह ज्ञान मुझे आप लोगों से मिला। दातादयाल के शब्दों में तो केवल इशारा था।

एक व्यक्ति मेरे पास आकर बहुत रोया। मैंने पूछा कि क्या बात है। उसने बताया कि ८—९ वर्ष हुये मैंने एक गुरु से सुरत शब्द की दीक्षा ली। अभ्यास करने लग गया और बहुत बहुत दृश्य देखे। एक दिन मैंने एक महात्मा को देखा। उसने कहा कि तू पार जाना चाहता है तो मुझे आकर मिल। मैंने उस महात्मा की बहुत खोज की। व्यास गया, आगरे गया और भी बहुत जगह गया मगर वह महात्मा न मिला। फिर मुझे किसी ने आपके बारे में बताया। आज आपके दर्शन किये। आप वही महात्मा हैं जिनको मैंने अपने अन्तर

देखा था।

अब मैं तो उसके अन्तर गया नहीं। जो कुछ उसने अपने अन्तर देखा, वह माया थी। सहसदल कंवल, त्रिकुटी, महासुन्न सब माया है और यही काल है। इससे निकलने को गुरु का सत्संग किया जाता है। मैं इस सचाई को खोले जा रहा हूँ ताकि जो जीव अपने घर जाना चाहते हैं वह इस माया रूपी सांसारिक जीवन में ही न फँसे रहें और अभ्यास के चक्र में ही न पड़े रहें। अपने निज घर पहुँच जांय। यह है संत मत।

साधन भी हर एक आदमी नहीं कर सकता। साधन का अवसर भी प्रालब्ध कर्म के अनुसार मिलता है। यदि मैं अपने प्रालब्ध कर्म के अनुसार गिरता हूं तो मैं भी वहाँ नहीं पहुँच सकता। अपने आपका ज्ञान प्राप्त करके उसमें रहना निर्वाण है। चूँकि आम लोग निर्वाण नहीं चाहते इसलिये उनको कर्म काण्ड है। ब्राह्मण पूजा पाठ करते हैं। मूर्त्ति पूजा करते हैं। मैं किसी को बुरा नहीं कहता। इससे विचार में परिवर्तन आता है। कर्मकाण्ड है क्या? विचारधारा ही तो बदली जाती है। किसी ने मूर्त्ति से बदल लिया। किसी ने पोथी से बदल लिया। असली कर्मकाण्ड है मन के विचारों को अनुकूल बनाना। 'शिव संकल्प मस्तु'। जिस दुनियाँ में हम रहते हैं यह माया देश है। यह सहसदल कंवल, त्रिकुटी, सुन्न महासुन्न क्या है? यह सब मन की अवस्थायें हैं। जब मन निर्विकल्प अवस्था में होता है और कुछ सोचता नहीं तो उस समय उसको कहते हैं महासुन्न। जब वह महासुन्न की चेतन्यता में होता है तो उसको सुन्न समाधि कहते है। जब वह किसी विचार में लीन होता है तो वह है त्रिकुटी। जब अनेक विचारों में लीन होता है तो उस अवस्था का नाम है सहसदल कंवल।

हम २४ घंटे माया में रहते हैं। मन कभी एकवाद में रहता है और कभी अनेकवाद में। लेकिन निर्वाण में यह वाद नहीं है। वह

तो मन के परे की अवस्था है। तुमने मन को काबू करना है। तुम्हारे विचार के अनुसार ही तुम्हारी विचारधारा होगी। विचार में बड़ी शक्ति है। स्वप्न में भी तुम स्त्री बनाकर उससे भोग करते हो और तुम्हारा वीर्यपात हो जाता है यह सब विचार का ही परिणाम है। स्वप्न में तुम बोलने लग जाते हो। डरते हो। तुम्हारे हाथ पांव काँपने लग जाते हैं। इससे सिद्ध होता है कि मन का संकल्प प्रभाव रखता है। इसलिये ऋषियों ने शुभ संकल्प मस्तु की शिक्षा दी है। अपने विचार को ठीक रक्खो। किसी का बुरा न चाहो। किसी से द्वेष न रक्खो। शुभ संकल्प रखना इस माया देश में लाभप्रद है। चूंकि मन महा चंचल है और ठहरता नहीं, इसलिये इसको ठहराने के लिये सुमिरन ध्यान दिया जाता है ताकि यह अनावश्यक विचार न उठाये। तुमको इसे कुमार्ग से हटाकर सुमार्ग पर लाना है।

तुम शराब पीकर स्त्री भोग करते हो। विचार गंदे हैं। बच्चा पैदा होना है। फिर तुम यह चाहो कि बच्चा बड़ा होकर आज्ञाकारी हो और अच्छे विचार वाला हो तो यह असम्भव है क्योंकि माया देश में संकल्प प्रधान है। इसलिये हिन्दुओं में १६ संस्कार दिये जाते हैं। गर्भाधान भी एक संस्कार है।

मुझे याद है कि जब मैं पहिली बार लाहौर में सुबह ६ बजे से लेकर २ बजे तक दातादयाल का आश्रम ढूंढ़ता रहा और जब मिल गया तो मैंने दरवाजा खट खटाया। अन्दर से दाता जी ने पूछा कौन है ? उस समय मैं मस्ती में था। मैंने कहा—

"प्यारे कुंडरा खोल, फकीरा तेरा बाहर खड़ा ॥"

मैं विश्वास के साथ उनके पास गया था कि वह मेरे लिये अवतार लेकर आये हैं। उस समय उन्होंने कहा था कि फकीर ! तुम फकीरां में चाँद बनोगे। उनका उस समय का जो संस्कार था मुझे काम-याब कर गया।

मेरे छोटे भाई का नाम ढेरूमल था। दातादयाल ने कहा कि नाम

अच्छा नहीं है। संस्कार ही खराब है। मैंने कहा कि हुजूर इसका नाम बदल दीजिये। सुबह को उसका नाम सुरेन्द्रनाथ रक्खा और कहा कि सुर + इन्द्र + नाथ। तू देवताओं का भी राजा है और उसको कुर्सी पर बिठा दिया। वह विश्वासी था। रायसाहब बन गया और २५००) रु० तनख्वाह लेकर रिटायर हुआ।

माया देश का कानून है शिव संकल्प मस्तु। इसलिये जो महात्मा यह काम करते हैं उनको कहना चाहता हूँ कि कभी भी किसी को कमजोर संस्कार न दो। प्रोत्साहन और स्वतन्त्र विचार दो क्योंकि यह माया का देश है। मैंने कल भी बताया था कि मेरे लिये यह राधास्वामी मत एक नई चीज थी। इसमें समस्त ऋषि मुनियों को अधूरा बताया गया है। राम और कृष्ण को काल का अवतार बताया गया है। सत का अवतार नहीं बताया। मैं यह बाणी सुन नहीं सकता था क्योंकि मुझे अपने सनातन धर्म की टेक थी। उस समय मैंने प्रण किया था कि सच्चा होकर इस रास्ते पर चलूँगा और जो कुछ मेरा अनुभव होगा वह संसार को बता जाऊँगा। मैं जीवन भर तलवार की धार पर चला हूँ। मैं गिरता भी रहता हूँ और संभलता भी रहता हूँ।

इसलिये आज गृहस्थियों को कह रहा हूँ कि हमेशा आशावादी विचार रक्खो। किसी का बुरा मत सोचो। "जो करि हैं सो भला।" जो भयभीत हो जाते हैं वह Passimistic (निराशावादी) हैं। यह ठीक नहीं है। अच्छी संतान पैदा करो। जिस ख्याल को लेकर स्त्री पुरुष का मिलाप होगा, वैसी ही संतान पैदा होगी। बच्चों को ऊँचा ख्याल दो। उनसे घृणा मत करो। उनको गंदा मत कहो, मगर तुम ऐसा कर नहीं सकते। कल एक स्त्री आई और कहने लगी कि बाबा जी मेरा लड़का मेरा कहना नहीं मानता। मैंने कहा कि तुम भी जवान लड़के को कुछ मत कहा करो। कहने लगी कि बाबा जी! मुझसे रहा नहीं जाता। मैंने कहा कि यदि तुम ऐसा नहीं कर सकती

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

तो वह भी कैसे अपने आपको वश में रख सकता है। मुझे अपने लड़के शाह पदमजग से आज तक कोई शिकायत नहीं हुई क्योंकि मैंने उसको इसी ख्याल से पैदा किया है।

जीवन का उद्देश है दूसरों को सुख पहुंचाना। सबसे पहिले अपनी संतान को पालो। मन्दिर, गुरुद्वारे, डेराधामों को देने से तुम्हारा कल्याण नहीं होगा। गरीबों की सहायता करो। बूढ़े माँ बाप और निर्धन बहिन भाई की सहायता करो। तब तुम्हारा भला होगा। Charity begins at home (दान घर से ही आरम्भ होता है) फिर यदि कुछ बचे तो बाबा फकीर को दो।

क्या कोई महात्मा ऐसी शिक्षा देता है ? इसलिये मैं कहता हूँ कि मैं संत सतगुरु वक्त हूँ। यदि हर एक अपने निर्धन भाई बहिन की सहायता करे तो दुनियाँ से गरीबी दूर हो जाय। अधिकारी लोगों को तो कोई देता नहीं है, अपने नाम के लिये लोग मन्दिर, गुरुद्वारे आदि के लिये दान देकर अपने नाम के पत्थर लगवाते हैं। मैं यह नहीं कहता कि मत दो। दो लेकिन अधिकारी को दो। हम भी यहां देते हैं। एक बच्चा यहाँ परवरिश पा रहा है आगे पढ़ रहा है। इसकी मां मर गई। इसके बाप ने दूसरी शादी करली। दूसरी शादी करने को तो तैयार हो गया मगर बच्चे के पालने को तैयार नहीं था। इसलिये आज इस शिक्षा की आवश्यकता है। पहिले अपने परिवार को पालो। फिर है सत्संग। यह विश्वास रक्खो कि हम इस दुनियां में यात्री हैं। कोई १० वर्ष को, कोई २० वर्ष को, कोई ५० या १०० वर्ष को आया है।

मेरी स्त्री २॥ वर्ष बीमार रही। मैं कुटुम्ब के उन लोगों की सहायता करता हूँ जो मेरी स्त्री की बीमारी के समय कभी नहीं आये। वह मर गई, तब भी नहीं आये। उसके क्रिया कर्म पर भी नहीं आये और न उन्होंने कभी किसी तरह की सहायता की।

यदि निर्वाण चाहते हो तो शब्दब्रह्म को पकड़ो और दुनियां में

यात्री की तरह रहो। गृहस्थियों के लिये है वेद मार्ग। जीओ और जीने दो। एक दूसरे के काम आओ।

देखो प्रेमानन्द ? दातादयाल जी के साथ हमारा सब का प्रेम था। वह चले गये। उनका स्थान उजड़ गया। मैंने जो कुछ हो सका धाम के लिये किया। अब यह ड्यूटी तुम्हारे सुपुर्द करता हूँ कि धाम में उनकी यादगार कायम रहे। वहां काम करते रहना। यह चोगा तुमको पहिनने के लिये देता हूँ और यह आसन देता हूँ। इस पर बैठकर अभ्यास किया करना। हैदराबाद दक्षिण में नन्दूभाई और आनन्दराव जी हैं। हरियाना में संत ताराचन्द हैं। उत्तर प्रदेश में तुमको आचार्य नियत करता हूँ। और मुसलमानों में कादरी बाबा को आचार्य नियत करता हूँ। मैं चाहता हूँ कि मानव जाति में एकता हो।

॥ सत्संग ॥

परम दयाल जी महाराज

(मानवता मन्दिर, होशियार पुर ६-१-७१

कैसे गाऊँ गुरु महिमा अगम अपार।
गुरु प्यारे मेरे राधास्वामी दाता उनके चरण पर जाऊँ बलिहार।
राधास्वामी महर से अंग लगाया, काल जाल से लिया है निकार॥
शब्द भेद दे सुरत चढ़ाई, घण्टा शंख सुनी धुन सार।
लाल सूर लख चन्द निहारा, मुरली सुन धुन बीन सम्हार॥
राधास्वामी चरन परस मगमानी, पहुँच गई अब धुर दरबार

मैं आज बाहर दौरे पर जा रहा हूँ। किसी दिन हमेशा के लिये भी चला जाऊँगा। क्यों ? छोटी आयु से मेरे मन के अन्तर दुख, भ्रम और शंकाओं के कारण अशान्ति थी। शान्ति की, सुख की या मालिक की खोज

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

हुई थी। मौज ! यदि कोई कर्म होते हैं तो मेरे कर्म। मैं तो अपने कर्म नहीं समझता। उसका कर्म समझता हूँ। हुजूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज के चरणों में ले गया। उन्होंने नाम दान दिया। फकीरी का संस्कार दिया और संसार के निबल अबल अज्ञानी जीवों की सहायता करने, जगत कल्याण का काम करने और उनको भवसागर से पार उतारने के लिये काम दिया था। मैं इस मन और काल के चक्र से निकल नहीं सकता था। काल का चक्र क्या है ? मन के अनेक प्रकार के विचार, मन के प्रश्नोत्तर और मन की वासनायें और तरंगें। यह माया का चक्र है। दाता दयाल जी ने इस चक्र से निकालने के लिये मुझे यह गुरु पदवी दी थी। सत्संगियों के तजुर्बों से कि मेरा रूप उनकी सहायता करता है और मैं नहीं होता, मुझको इष्ट पद का पता लग गया। इष्ट पद क्या है ? शब्द ब्रह्म, नाम, धुनात्मक नाम या अनहद ! अभ्यास मैंने बहुत किया है। जिस तरह इस शब्द में लिखा हुआ है—घंटा शंख सुने, लाल सूर्य देखे, मगर शान्ति नहीं मिलती थी। धुरधाम का पता नहीं लगता था। जब से यह ज्ञान हुआ, मेरी सुरत इतनी ऊँची चली गई जहाँ एकत्व है, शान्ति है, सर्व-व्यापकता है चूंकि मेरे जिम्मे ड्यूटी थी मैंने अपनी ड्यूटी को बड़ी सत्यता, निष्कपटता, निष्कामता से निभाया। चूंकि दातादयाल जी ने कहा था कि फकीर ! चोला छोड़ने से पहिले शिक्षा को बदल जाना इसलिये मैंने मानवता मन्दिर की नींव रक्खी। मानवता मन्दिर का मेरा भाव इतना ही है कि मनुष्य जो मन के चक्र में आकर अज्ञान और भ्रम में भटकता फिरता है, उसको सचाई का भेद नहीं मिलता, वह मिल जाय।

सचाई क्या है ? यह कि माया देश में यदि कोई हमारा सहायक हो सकता है तो हमारा संकल्प और वासना हो सकता है। यही वेद मार्ग है—'शुभ संकल्पमस्तु'। मैंने विचार की शक्ति को समझकर अपने जीवन में अपने विचार को ठीक रखने के लिये अपने अनुभव के आधार पर वर्णन किया। मन के परे प्रकाश है, पारब्रह्म है आत्मा-आनन्द है। उसको प्राप्त करने के लिये यह शिक्षा दी है कि अपने अन्तर सावित्री को प्रगट करो जो

सनातन धर्म का मूल मंत्र है। यदि सत का जीवन चाहते हो तो शब्द को पकड़ो।

श्री गोपीलाल कृषक को मैंने नाम दान नहीं दिया किन्तु उन्होंने मुझे परमार्थिक दृष्टिकोण से लिखा। मैंने लिखा कि मुझको मेरे सतगुरु ने राधास्वामी नाम और गुरुस्वरूप का ध्यान दिया था। तुम जहाँ से चाहो नाम ले लो मगर मेरा साहित्य पढ़ते रहना। उसने मेरे खत को नाम समझकर साधन किया। तीन वर्ष में उसके पिछले कर्मों के अनुसार या दाता की दया से उसका शब्द और प्रकाश खुल गया। जब बीन बजने लगी तो वह मेरे पास कुछ वर्ष हुये ९ सेब लेकर आये। जब उन्होंने अपनी डायरी सुनाई तो मेरी आँख खुल गई। उस समय मैंने उनको पाँच पैसे और एक नारियल भेंट करके कहा कि दुखी और अशान्त प्राणियों को मेरे अभ्यास और साधन की विधि बताते रहा करो। वह कई वर्षों से बाहर नाम दान देते रहते हैं। यहां मैंने मानवता मन्दिर बनाया। मेरी इच्छा है कि संत मत की सच्ची शिक्षा चालू रहे। इस विचार से मैंने उनको लिखा। लिखने का कारण यह था कि उन्होंने अपना फार्म और जायदाद अपने दो लड़कों को बांट दी। उन्होंने भूपसिंह को कहा कि जीवन के खर्च के लिये मैं कुछ काम करना चाहता हूँ ताकि सत्संग भी कराता रहूँ और काम भी करता रहूँ और मेरी रोटी का सामान भी बना रहे। तो मैंने उनको लिखा कि यदि आप मानसिक और शारीरिक रूप से अपने सम्बन्धियों से निस्सम्बन्धित हैं तो आप यहां आ जाइये। वैसे यह संसार है, मिलना जुलना रहता ही है। दाता का मिशन है। उसको पूरा करते रहो। आपने सेवा भी की तो इसके बदले में आपको खाना और कपड़ा मानवता मन्दिर की ओर से मिलता रहेगा। इस लिये शायद कृषक जी आजायें। इसलिये उनको यह हिदायत करता हूँ कि अपने जीवन में केवल परोपकार के ख्याल से जीवों के दृष्टिकोण से उनकी प्रकृति के अनुसार जो भी उनके सम्पर्क में नाम दान लेने या सम्मति लेने आये वह विचार और विचार की फिलोसफी को समझकर लोगों के पथप्रदर्शक बने रहें। मैं आशा करता हूँ कि मानवता मन्दिर के ट्रस्टी या दूसरे

आदमी जो मेरे सम्पर्क में आते हैं वह यथा योग्य उनका मान सम्मान करते रहेंगे। साथ ही उनको यह हिदायत देता हूँ कि वह कभी अपने आप को गुरु न मानें। गुरु नाम है ज्ञान का, अनुभव का, विश्वास और श्रद्धा का। चूंकि आरम्भ में जीव निबल अबल और अज्ञानी होते हैं, उनको इस ऊँची बात का ज्ञान नहीं होता इसलिये उनके साथ उनकी लेविल पर आकर उनके ख्याल के साथ सहमत होते हुये उनका उद्धार करना और उभारना आवश्यक है। मैं यह काम जनरल जैसिंह जी को दे जाता मगर चूंकि वह बहुत बड़ी पोजीशन पर रहे हैं और वह ज्ञान मार्ग के अनुयायी हैं, वह निबल, अबल और अज्ञानी जीवों की लैविल पर नहीं आ सकते। मैं सन् १९३१ में जब दाता दयाल के दरबार में गया था तो वह जमीन पर बैठे हुये थे। पाँव से नंगे, सिर से नंगे और बदन से नंगे! एक लंगोट बधा हुआ था। ४०-५० दुखी और अशान्त प्राणी उनके आस-पास बैठे हुये थे। मैंने उनको मत्था टेका, सिर को ऊपर उठाकर कहने लगे—फकीर यदि इन जीवों को ऊँचा ले जाना चाहते हो तो तुम को इनके लैविल पर आना पड़ेगा।

मैं आशा करता हूँ कि कृपक जी निबल, अबल और अज्ञानी जीवों की लैविल पर आकर उनको शान्ति और सच्चा मार्ग बताने की कोशिश करेंगे। इस सचाई को जिस को आज दिन तक सब महापुरुषों ने गुप्त रक्खा, मैंने इसको मसलहतन खोला है ताकि अज्ञान के कारण एक तो जीव लुट न जाय। आज कल का गुरुइज्म जीविका का साधन है, अपने मान, अपने डेरे के लिये गलत प्रोपेगण्डा करके संसार में धार्मिक गद्दियों और पंथों के भेद-भाव या गैरियत का प्रचार किया जा रहा है। यदि मेरे बाद कृपक जी आजायें तो उनको यह सत्संग सुना देना और उसकी एक प्रति 'मनुष्य बन' को भेज देना। मैं यह जानता हूँ कि मेरे इस स्पष्ट वर्णन से मानवता मन्दिर की आर्थिक स्थिति अच्छी होना कठिन है मगर मैं यह आजमाना चाहता हूँ कि 'सत्यम् विजयति' दुनियाँ में कोई वस्तु है कि नहीं। मेरा सारा जीवन 'सत्यम विजयति' के सिद्धान्त पर व्यतीत हुआ। मैं तो अपना

निर्वाह कर गया। देने वालों ने यथाशक्ति दिया। एक दो आदमियों ने मेरी भी सेवा की। फिर भी मेरे सिर पर एक ऋण था। यदि कृषक जी यहाँ का कारबार संभाल लें, मैं भी यहां रहूँगा, तो मेरा विचार धाम (राधास्वामी धाम) पर एक दो महिना रहकर उसको आवाद करने का है मगर यह मेरे वश में नहीं है। दाता दयाल का जो अहसान मुझ पर था, जो काम उन्होंने मुझे दिया था वह मैं कर चला।

श्री कृषक को ताकीद करता हूँ कि मानवता मन्दिर के बनवाने में जिन्होंने मेरी सहायता की और जो मुझ से प्रेम करते हैं उनको अपना बुजुर्ग समझ कर उनके हृदय में उन के लिये शुभ भावना हो। एक सवाल मेरे मन में बार बार आता है कि फकीरचन्द यदि तू किसी के अन्दर नहीं जाता है तो दूसरों की सहायता कैसे होती है। मेरा अनुभव यह कहता है कि एक तो लोगों का विश्वास है दूसरे रेडियेशन का नियम काम करता है, किसी वीतराग पुरुष के सत्संग का प्रभाव काम करता है। तो कृषक जी! यदि आप अपने हृदय को शुद्ध रखकर, शब्द और प्रकाश के साधक होते हुए यह काम करेंगे तो हो सकता है कि आप की रेडियेशन से दूसरों को लाभ पहुँचे। मेरा अनुभव मुझे कहता है कि समय आयेगा जब दुनियां के बुद्धिमान और पढ़े लिखे आदमी संतों की असली और सच्ची शिक्षा को, जिसको मैंने बिल्कुल स्पष्ट कर दिया है, कदर करेंगे और इससे लाभ उठायेंगे।

मैंने मानवता मन्दिर में सन्तों के फोटो रक्खे हुये हैं। जितने भी शब्द-ब्रह्म या शब्द या अनहद मार्ग के अनुयायी हैं सब का मान सम्मान आपके लिये आवश्यक है। राधास्वामी किसी मनुष्य का नाम नहीं है। वह तो सुरत का शब्द से मेल है, जो भी सज्जन यहाँ शब्द योग के अनुभवी हों या राधास्वामी नाम न भी लेते हों, अन्तर 'शब्द' के साधक हों सबका मान करते रहना। कृषक जी को यह भी हिदायत करता हूँ कि यह ट्रस्ट है। मैंने ट्रस्ट के काम में कभी दखल नहीं दिया। यह प्रबन्ध है। इस प्रबन्ध में जनरल जैसिंह हैं, श्री हरविलास जी, श्री दुर्गा दास जी हैं। और भी ट्रस्टी

हैं। वाइस प्रेसीडेण्ट भी हैं। इनको पूर्ण अधिकार हैं। आप अपनी राय जैसी उचित समझें दे सकते हैं। यदि आप किसी दुखी की सहायता करना चाहें तो शिफारिस कर सकते हैं। मालिक करे मानवता मन्दिर के पास काफी धन हो जाय ताकि यह अपने धन से दुखियों और अशान्त लोगों की सहायता करता रहें। यही कुछ है। इससे ट्रस्ट का गौरव स्थित रहेगा। यदि ट्रस्ट में किसी बात का कोई झगड़ा पड़ जाय क्योंकि सबकी प्रकृति अलग होती है उस समय उनकी राय मुख्य समझी जानी जाहिये।

मैंने अपनी सच्ची नीयत और सच्चे हृदय से कृषक जी को यह काम देते हुए किसी प्रकार का कोई स्वार्थ और मान सम्मान का ख्याल नहीं रकखा। न मैंने कृषक के घर का खाया और न किसी प्रकार की आर्थिक सहायता उन्होंने अपने पास से या सत्संगियों द्वारा कराई। मैंने अपनी नीयत से जो जो जो छाँट की है वह ठीक की है। आगे मालिक की मौज ! मैं भारतवर्ष में पहला व्यक्ति हूँ जिसने आध्यात्म और सत्यता के प्रगट करने में किसी प्रकार की पौलिसी नहीं रक्खी और धार्मिक न पाँथिक गरज रक्खी।

ऐ दाता ! मौज आपके चरणों में लाई थी। आपने फकीरी का संस्कार दिया था। चार आज्ञायें दी थी। मोहमाया चतुराई और छल कपट को छोड़ कर काम करना। मैंने अपनी नीयत से यह चारों छोड़ कर काम किया। जो अनुभव किया बता चला।

नोट—कोई यह न समझे कि मैं मर रहा हूँ। मरना और जनम लेना किसी और शक्ति के हाथ में है।

नोट—इस लेख में क्रियात्मक (असली) दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण बातें कही गई हैं जो एक आचार्य के लिये तो आवश्यक हैं ही मगर परमार्थ के जिज्ञासु भी इन पर चल कर शान्ति प्राप्त कर सकते हैं। देवीचरन मीतल

संत बाणी

(ले०—महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज)

१—मनुष्य के जीवन में विचित्र बातें दिखाई पड़ती हैं। हाजिर में हुज्जत और गायब की तलाश।

२—इच्छा के पूरे होने पर हबिस बढ़ती है और पूरी होने पर कुल्फत रहती है।

३—जो व्यक्ति अपने आपको अज्ञानी कहता है, इसको अपनी अज्ञानता का पता नहीं है। जो ज्ञानी बनता है उसका ज्ञान हेच है।

४—पुरुष का हृदय स्त्री की तेग रूपी जुबान का निशाना है। ईश्वर ने स्त्री की जुबान को तलबार तो बनाया मगर उससे लिये म्यान बनाना भूल गया।

५—सचाई के एक नुक्ते को धोने के लिये सौ मन खुशामद के पानी की आवश्यकता होती है।

६—यदि सब शीशमहल में रहते तो कोई किसी का आदर कभी न करता। शुकर है कि ऐसे महल लोगों को नहीं मिलते।

७—दुनियां में हर वस्तु का मूल्य है। मित्रता का मूल्य नहीं। यदि वह मूल्य से मिल जाय तो उसे मित्रता कभी न कहना।

८—कामी का गुरु सबसे स्याना है। वह और किसी का भूलकर भी शिष्य न हो सकेगा।

९—धनी समझता है कि धन उसका है। वह धन का नहीं है मगर सच यह है कि वह धन का है और धन उसका नहीं है।

१०—हम निस्संदेह शिक्षाओं को ग्रहण करते हैं मगर क्यों ? इसलिये कि दूसरों को दिया करें।

११—असली मनुष्य वह है जो अपने घर में सर्वप्रिय है। यदि तुम ऐसे हो तो धन्य हो। यदि नहीं हो तो प्रयत्न करो।

RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY PURNADAYAL

१२—जिसने अपने आपको जीत लिया वह सच्चा विजयी है जिसकी स्त्री काबू में है वह दुनियां का बादशाह है।

१३—असल में स्त्री के लिये मर्द का शब्द अधिक उपयुक्त है यदि मर्द को स्त्री कहा जाता तो अधिक उचित होता, क्योंकि स्त्री ही दोनों में ऊंची रहती है।

१४—बाहर सुधार के उपाय पर तर्क वितर्क बहुत होते हैं मगर घर में स्त्री कान पकड़कर उठाती बिठाती रहती है। ऐसी दशा में कौन किसकी सुने।

१५—दुनियां की खुशी औरों की निन्दा में है। दुनियां का मजहब दूसरों के विश्वासों पर लानतान है। दुनियां की सफलता गरीबों का खून चूसना है।

१६—हिन्दू बड़े मितव्ययी प्रसिद्ध हैं। क्यों ? क्योंकि यदि उनको समय की आवश्यकता होती है तो पूजा पाठ के समय को कम कर देते हैं। यदि धन इकट्ठा करने की आवश्यकता होती है तो अपना पेट काटते हैं।

१७—बुद्धिमता का अर्थ दुनियां में औरों को धोखा देना और उनकी आँखों पर पट्टी बाँधना है।

१८—जो सोच समझकर चुप हो जाता है वह मूर्ख और जो बिना समझे बूझे शोर मचाता है वह बुद्धिमान समझा जाता है। बुद्धि और निबुद्धि के नापने का यह पैमाना दुनियां में हर जगह देखा जाता है।

१९—शेर और साधु अकेले ही रहते हैं। मगर दुनियां साधु उनको कहती है जिनके साथ जमात है।

२०—धान, पान और मदिरा यह पुराने ही अच्छे होते हैं। स्त्री घोड़ा और औजार यह नये अच्छे लगते हैं।

२१—बूढ़ी स्त्री से उसकी आयु पूछो तो वह कम बतायेगी। जोगी से उसको आयु पूछो तो वह सैकड़ों वर्ष की गिनती गिनायेगा। इनमें से किसी का भी विश्वास न करो।

❀ तड़प ❀

(ले०—महर्षि शिवव्रतलाल जी महाराज द्वारा)

बिरह की आग कलेजे में भड़की,
निशदिन सोच रहे मन में री ।
जा दिन से पिया भयो बिछोहा,
आय पड़ी पिंजरे तन में री ॥
बिलखूँ, तड़पू पिया तुम कारन,
मिरगन भटकी ज्यों बन में री ।
अँखियन नीर बहे जल धारा,
जोत नहीं मेरे नैनन में री ।
काँटा बिरह का उर में साले,
कैसी फंसी मैं उलझन में री ॥
स्वाँति बूंद जैसे रटत पपिहरा,
मैं रटती पिया छिन २ में री ॥
मैं पृथ्वी तुम गगन विराजो,
कैसे मिलूं सजनी छिन में री ।
पंख नहीं जो उड़ के जाऊँ,
जीव पड़ा नित चिन्तन में री ॥
राधास्वामी दया के सागर,
दया करो प्रभू इस पन में री ॥

—

प्रवचन

परम दयाल फकीरचन्द जी महाराज

(मानवता मन्दिर, होशियारपुर ५-१-७२)

जाकी लगन राम से नाहीं ॥
सो नर खर कूकर सम जग में, वृथा जियत जग माहीं ॥
कहा भयो उत्तम कुल जनम्यो, शील नहीं घट माहीं ॥
अमृत छाँड़ि विषय रस पीवत, धिक-धिक उनके ताहीं ॥
हरी बेल की कड़वी तोमड़ी, सब तीरथ फिर आई ॥
जगन्नाथ के दर्शन करके, गई नहीं कड़वाई ॥
जैसे विटप उजाड़ जंगल में, बिन स्वारथ झड़ जाई ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, अन्त समय पछताई ॥

मैं अपने आप से सवाल करता हूँ कि तुमने राम से लगन लगाई थी। राम क्या है ? क्या तुमको राम का कुछ पता लगा ? मेरा सारा जीवन इसी धुन में व्यतीत हो गया। राम सगुण भी थे और निर्गुण भी थे। शब्द भी थे और प्रकाश भी थे और उससे परे भी हैं। एक आदमी राम राम नहीं जपता मगर उसको पूरा विश्वास है कि इस सृष्टि का बनाने वाला कोई है। चाहे वह उसको जानता है या नहीं मगर वह उस पर विश्वास रखता है। मेरी समझ में उसको भी राम की लगन है। एक आदमी उसको साकार रूप में मानता है। उसकी बुद्धि उस साकार से आगे नहीं जाती। वह भी राम की लगन रखता है। मनुष्य का किसी जगह विश्वास होना आवश्यक है। विश्वास होने के बाद उसमें क्या गुण पैदा हो जाता है ? मान लो कोई ऐसी घटना हो गई जिसको सहन करना कठिन हो तो उस घटना से जो अशान्ति या भ्रम होता था वह नहीं होगा। उसमें सहनशक्ति और शीलता आ जाती है। कबीर साहब कहते हैं :—

कहा भयो उत्तम कुल जनम्यो, शील नहीं घट माहीं ॥

राम के विश्वास से या साकार और निराकार के विश्वास से या शब्द और प्रकाश रूप हो जाने से मनुष्य के मन में शान्ति आ जाती है। जिसके मन में शान्ति है और किसी तरह की घबराहट नहीं है वही सच्चा राम को याद करने वाला है। इष्ट पद शान्ति है। जो व्यक्ति इस संसार में बड़ी से बड़ी घटना होने पर भी घबराता नहीं है और उसको उस सच्चे मालिक की इच्छा समझता है वही सच्चा भक्त है। जो मुंह से राम राम जपने वाला दृढ़ विश्वास नहीं रखता वह अधूरा है। दो दो घंटे कानों में उंगली डालकर अभ्यास करने वाले, मत्था टेकने वाले या नमाज पढ़ने वाले आदमी को अगर राम राम या खुदा की लगन नहीं है और उसको शान्ति नहीं मिलती तो वह राम का पुजारी नहीं है। यह क्रियात्मक जीवन का पाठ है। मेरे सतगुरु दाता दयाल जी महाराज मेरे नाम शब्द लिखकर मुझे यह समझ देने के लिये भेजा करते थे।

यह अमली जीवन के सत्संग हैं। बिना अमल के कुछ नहीं बनता। उस मालिक का किसी ने अन्त नहीं पाया। बेफिक्री से जीवन गुजारना ही राम की भक्ति है। यह मेरा अनुभव है। तुमने तो सृष्टि को बनाया नहीं। किसी शक्ति ने बनाई है और वह शक्ति अपना काम अवश्य करेगी। राम के भक्त में शान्ति होनी चाहिए। दाता दयाल ने मेरे नाम एक शब्द लिखा था :—

जिसके मन नहिं चिन्ता व्यापे, जग में वही है दास फकीर।
अभय रहे चित गुरु पद राखे, धीर भीर गम्भीर॥

गुरु पद है शान्ति और शीतलता। दाता दयाल ने मुझे फकीर बनाया था मगर मुझे समझ नहीं आती थी। वह मुझे शब्दों के द्वारा चेतावनी दिया करते थे और समझाया करते थे। जब लोगों ने मुझे बताया कि मेरा रूप उनके अन्तर प्रगट होकर उनकी तरह तरह से सहायता करता है मगर मैं नहीं होता तो मुझे असलियत का ज्ञान हो गया। इसलिये—

शान्त भाव व्यौहार परमारथ, कभी न हो दिलगीर।

जिनको विश्वास होता है वह शान्त चित्त रहते हैं और घबराते नहीं। वही राम के सच्चे भक्त हैं चाहे वह राम जपें या न जपें। चाहे वह किसी धर्म के मानने वाले हों।

अपनी पीर न उर में साले, लखे पराई पीर ॥

अपने कष्ट की चिन्ता न करे और दूसरों के कष्ट को दूर करने का प्रयत्न करे। ऐसे पुरुष को कोई कष्ट न होगा। सेवा समिति वाले दूसरों के घरों में मुर्दे उठाने जाते हैं। उन्हें कोइ कष्ट नहीं होता क्योंकि वह उनके नहीं होते।

पर की पीर न जिसे सतावे, सो अधरम बेपीर ॥

जो दूसरों के दुख को महसूस नहीं करता न सही मगर अपनों की और अपने मिलने वालों के दुख को तो महसूस करे। तुलसीदास जी ने कहा है—

मित्र दुखी जो न होय दुखारी।
ता सिर आपत आवे भारी ॥

जो दूसरों के दुख को महसूस नहीं करता वह दुखी होता है। सगुण, निर्गुण, शब्द प्रकाश, राम रहीम, कृष्ण अल्लाह यह सब उस मालिक के ही नाम हैं और सब उसके ही रूप हैं। चाहे किसी रूप से उस अवस्था को प्राप्त करो। किसी के दुख से दुखी तो क्या होना है कभी कभी हम खुशी मनाते हैं। उदाहरण के रूप में जब बंगला देश के लोगों पर पाकिस्तान की फौज भारी अत्याचार कर रही थी और वहां के लोग भारी आपत्ति में थे तो पाकिस्तान के लोग भारी खुशी मनाते थे। लड़ाई में हिन्दुस्तान के आदमी मर गये पाकिस्तानी खुशी मनाते थे और पाकिस्तानी मरते थे तो भारत के लोग खुशी मनाते थे। यह ठीक नहीं है। दुनियां की दृष्टि में बुरी बात बुरी है मगर परमार्थ की दृष्टि से सब एक हैं। इसी अज्ञान के कारण दुनियाँ बट गई और अशान्ति में पड़ गई।

अपना रूप संभाले पल पल, काट मोह जंजीर ॥

दाता दयाल जी का अपने रूप से क्या अभिप्राय है, वे जानते होंगे। मैं यह समझता हूँ कि मैं चेतन का एक बुलबुला हूँ। वह अनन्त शक्ति है। कोई उसको अकाल पुरुष कहता है। मैं उसका अश हूँ। उसी में से निकला हूँ और उसी में समा जाऊँगा। इस ज्ञान से मनुष्य को अहंकार नहीं रहता। और न निः अहंकारी बनता है। इससे मन शान्त रहता है।

यह फकीर है गुरु का प्यारा, महावीर चित धीर ॥

दाता दयाल जी महाराज मेरे सुधार के लिये लिखते हैं कि फकीरचन्द ! इस रास्ते पर आओ, तब तुम गुरु के प्यारे बनोगे । लोग तो यह समझते हैं कि मंदिर, मस्जिद या गुरुद्वारे बनादो या अधिक से अधिक भेंट दे दो, तुम गुरु के प्यारे बन जाओगे । यह बात नहीं है । अनुभव प्राप्त करने के बाद और उस रहनी में रहने के बाद उसके अनुसार जो अपना जीवन व्यतीत करता है वह गुरु का प्यारा है । अभ्यास जो कराया जाता है यह साक्षात्कार करने के लिये कराया जाता है ताकि जीव को ज्ञान हो जाय । जीव यह जान जाय कि मैं कौन हूँ ।

जब शरीर सुन्न हो जाता है तो तुमको शारीरिक रूप से कोई कष्ट प्रतीत नहीं होता । दुख तो तभी होता है जब तुम शरीर में आते हो । इससे सिद्ध हुआ कि तुम शरीर नहीं हो । जब मन संकल्प विकल्प छोड़ देता है तो तुम उस समय भी रहते हो इसलिये तुम मन भी नहीं हो । आगे है प्रकाश अर्थात् सत-चित-आनन्द । जब इसको भी छोड़ दोगे तो फिर न शब्द रहेगा न प्रकाश और न मन रहेगा । इसलिये तुम न शरीर हो न मन हो, न प्रकाश हो और न शब्द हो । तुम निज स्वरूप हो और उसका अंश हो । इस मन को ठहराने के लिये साधन और अभ्यास बहुत आवश्यक है । इसके बिना काम नहीं चलता ।

चाह गई चिन्ता सब भागी, आया भव निधि तीर ॥

वासनाओं का चला जाना ही चाह का न रहना है । फिर व्यवहार स्वाभाविक (automatic) होता रहना है । ऐसे पुरुष की कुदरत की ओर से स्वतः ही सहानुभूति रहती है । जो आदमी इस समझ से जीवन व्यतीत करता है वह किनारे पर आजाता है ।

हंस रूप धर त्याग नीर को, गह लिया ज्ञान का क्षीर ॥

हंस में दूध और पानी को अलग करने का गुण है । इसी तरह जो सार और असार की पहिचान करके सार को ग्रहण कर लेता है वह है हंस । जो सत ज्ञान को प्राप्त कर लेता है वह हंस है ।

राधास्वामी गुरु का सच्चा बालक, पहिर वैराग का चीर ॥

जिसमें वैराग आ जाता है वह राधास्वामी दयाल का सच्चा बालक है। वैराग दो प्रकार का होता है—एक कारण वैराग और दूसरा अकारण वैराग किसी का लड़का मर गया या कोई और शोक हुआ तो वैराग हो गया। यह कारण वैराग है। राजा जनक की तरह सब कुछ होते हुए भी समझ और ज्ञान प्राप्त करके वैरागी हो जाना अकारण वैराग कहलाता है।

तन के रहते मुक्त विदेही, सहे न द्वन्द शरीर ॥

जब तक शरीर है उसको दुख और सुख नहीं व्यापता है। शान्ति और शील प्राप्त करना चाहिए। यही कबीर कहते हैं :—

अमृत छांड़ि विषै रस पीवत, धिक धिक उनके ताहीं ॥

जो लोग अमृत अर्थात् शान्ति को छोड़ कर विषय विकार में लम्पट हो हो जाते हैं वह सुखी नहीं रह सकते। किसी न किसी रोग में फँस जायेंगे। रोगी का भी कोई जीवन है। वह चाहे जिया या न जिया।

हरी बेल की कड़वी तोमड़ी, सब तीरथ फिर आई ॥
जगन्नाथ के दर्शन करके, गई नहीं कड़वाई ॥

कड़वी तोमड़ी को चाहे तीर्थों के जल से न्हिलाते रहो वह कड़वी ही बनी रहेगी।

जैसे पुष्प उजाड़ जंगल में बिन स्वारथ झड़ जाई ॥
कहें कबीर सुनो भई साधो अन्त समय पछताई ॥

जंगल का फूल किसी के नाम नहीं आता। निष्काम सेवा करना ही कर्मयोग है। निष्काम सेवा ही तो करनी है। अपने घर वालों की सेवा करते रहो लेकिन कोई कामना रखकर अगर तुम अपने परिवार की सेवा करते हो तो वह निष्काम सेवा नहीं है लेकिन सेवा वह है जो निष्काम की जाय।

—:०:—

प्रवचन

परमदयाल फकीरचन्द जी महाराज

(मानवता मन्दिर, होशियारपुर ३०—३—७१)

गुरु के चरणों में पड़ा जब मेरा बन गया जनम ।
बन गया अब बन गया, फिर क्या बिगाड़ेगा करम ॥
चलते फिरते जागते सोते हैं, सुमिरन नाम का ।
वह धर्म मेरा हुआ क्या, धारूँ अब दूजा धरम ॥
भूला भटका काल माया ने, किया मेरा अकाज ।
मिल गये सतगुरु छुटा, जनमों का सारा है भरम ॥
सैकड़ों पोथी पढ़ीं, निकला न कोई मेरा काम ।
गुरु की संगत पाई, तब सूझा ठिकाने का मरम ॥
धन्य सतगुरु राधास्वामी, धन्य महिमा आपकी ।
हो दया सुमिरन भजन, और ध्यान मेरा हो नियम ॥

मैं अपने आपसे पूछता हूँ कि क्या तेरा जन्म बन गया ? तू भी तो दातादयाल के चरणों में गया था । रोचक भयानक झूँठी और खुशामदी बातें करने की मेरी आदत नहीं है । मैं हर एक चीज के समझने की कोशिश करता रहता हूँ । जो बात मेरे अनुभव में नहीं आई मैं उसको मानता नहीं । जो मैंने समझा कि मेरा जन्म बन गया वह कहता हूँ ।

जन्म जीवन है । हम जीवित हैं चाहे जाग्रत में जीवित हैं चाहे स्वप्न में चाहे गहरी नींद में अथवा तुरिया या तुरियातीत में । इससे परे भी हम हैं और वहाँ भी हमारा जीवन है । इस जीवन में रहते हुये हम चलते फिरते हैं, घबराते हैं चिन्तित होते है और खुशी भी मनाते हैं । तो जीवन में चिन्ता, फिक्र, शोक, दुख और अशान्ति का आना जीवन का बिगड़ना है । जीवन में रहते हुये हर एक अवस्था में बेगम, बेफिक्र, अडोल, सुख और शान्ति से रहकर जीवन व्यतीत

करने का नाम जन्म बनाना है। यदि और कोई संतों के मार्ग में जीवन बनाना है तो उसका मुझे पता नहीं। जीवन का बनाना एक यह भी समझता था और अब भी किसी हद तक समझता हूँ कि चलते फिरते सुरत अपने घर पहुँच जाय जहां से कि हम आये हैं। मैंने अपने घर की खोज करते-करते उम्र खो दी। खोजते-खोजते एक ऐसा अवस्था आ जाती है जहां अपने होने का भान नहीं रहता। उस अवस्था को तो हम जन्म नहीं कह सकते क्योंकि हमको अपने होने के अंश पने का ज्ञान नहीं होता। जब हमारे अन्तर में 'मैं पना' 'है पना' और 'चेतन पना' ही समाप्त हो गया तो फिर तो वह अजन्मा हो गया। इसीलिये मालिक को अजन्मा कहते हैं। हमारा आदि भी अजन्मा है। वह मालिक है और निजस्वरूप है। वह न जन्मता है और न मरता है।

गुरु की शरण में जाने से मुझे क्या मिला। वह मैं अपने कर्म भोग वश कहता हूं मगर कोई दावा नहीं कि जो कुछ मैं कहता हूँ वह ही सर्वथा ठीक है। मुझे तो अभ्यास में भी उसका कोई अन्त नहीं मिला। अभ्यास कभी एक जैसा नहीं रहता। इसमें नये-नये दृश्य और नई-नई दशायें आती रहती हैं। कभी प्रारम्भिक श्रेणियों में चक्कर लगाया करता था और चिन्ता किया करता था कि आज घंटा का शब्द सुनाई नहीं दिया या आज शंखनाद नहीं सुना। मैं उस चिन्ता को भी जन्म का बिगड़ना ही समझता हूँ। वास्तव में इन शब्दों का सुनना न सुनना दोनों ही जन्म का बनना और बिगड़ना है। कभी खुशी आ जाती है और कभी शोक हो जाता है। अब चूंकि सत्संगियों के अनुभव से मुझे यह ज्ञान हो गया कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता जो कुछ भी दृश्य जो कोई देखता है चाहे सहसदल कंवल में चाहे त्रिकुटी, सुन्न, महासुन्न और भंवर गुफा में, वह काल और माया है। साधु इसी को देखते हैं। ज्ञानी इसी पर विचार करते है। भक्त उसी से प्रेम करते हैं और कर्मेष्टी इसी पर कर्म करते हैं।

दातादयाल जी ने आज्ञा दी थी कि फकीर ! तुमको काम देता हूँ इसके करने रहने से तुमको सच्चे सतगुरु के दर्शन सत्संगियों के रूप में होंगे । वह अब हो गये । मैं बाहरी गुरु के चरणों में गया था । वहां से असली शब्द और प्रकाश में चला गया । जब प्रकाश में चला जाता था तो फिर जो बड़े सुन्दर दृश्य, तालाब तैरती हुई मछलियां आदि जो कुछ दृष्टि गोचर आया करता था वह सब माया सिद्ध हुये । जब तक मैं इनमें चक्र लगाता रहता था मुझे ठहराव नहीं मिलता था और न शान्ति मिलती थी । दुनियां की और अभ्यास की खेंचतान लगी रहती थी । मेरा जन्म तो ऐसे बना है कि मुझे किसी वस्तु की खोज या जांच पड़ताल नहीं रही । अब उस एक मालिक का भरोसा रखता हूँ जो सर्वोच्च है । सबका आदि और सबका अन्त है । कोई उसे राम कहता है कोई मालिक कहता है, कोई उसे भगवान या अल्लाह कहता है । कोई उसे निजस्वरूप कहता है और कोई राधा-स्वामी कहता है । मेरी तो यह समझ में आया है । यह भी इसलिये कहता हूँ कि मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा ।

गुरु के चरणों पड़ा जब, बन गया मेरा जनम ।
बन गया अब बन गया, फिर क्या बिगाड़ेगा करम ॥

जब यह ज्ञान होगया कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता तो मेरा जो कर्म था—कर्म कहते हैं गति या वासना को, जिससे या मेरी वासना के कारण जो मेरे अन्तर नाना प्रकार के दृश्य उठते थे, मैं अब उनमें फँसता नहीं । तो अब कर्म क्या करेगा ! कर्म मेरा क्या बिगाड़ेगा ! जो संस्कार सहसदल कंवल, त्रिकुटी, सुन्न, महासुन्न या भंवर गुफा के या धर्म और पथों के दिमाग पर पड़े हुये थे वह मेरा क्या बिगाड़ सकते हैं क्योंकि अब गुरु के चरणों में जाकर मुझे ज्ञान प्राप्त होगया है । जब सुरत शब्द और प्रकाश में चली जाती है तो कर्म कुछ नहीं बिगाड़ सकता क्योंकि वह तो हैं ही नहीं । पहिले भी नहीं थे । वह तो माया थी लेकिन भासती थी ।

चलते फिरते जागते सोते है सुमिरन नाम का ।
वह धर्म मेरा क्या हुआ, धारूँ अब दूजा धरम ॥

सुमिरन किस नाम का ? असलियत का कि मैं कौन हूँ । वह एक अपार और अनन्त समुद्र है । उसकी कोई थाह मुझे नहीं मिली । शायद किसी को मिल गई हो । कहने को तो सबने अनन्त कह दिया । मैं तो यह जानता हूँ कि वह मालिक अनन्त है । उसी में से आया हूँ और दुनियां में रहता हूं । जब तक उसकी मौज है यह खेल खेलता रहूंगा । जब बन्द हो जायगा तो फिर न आया न गया । इसका नाम है सुमिरन ध्यान और भजन ।

मैं ऐसा समझता हूँ मगर जीव इसमें ठहर नहीं सकता । इसलिये सुमिरन ध्यान और भजन है । अब देखो कि चलते फिरते सोते जागते में जिस सुमिरन का जिक्र है वह तो आदमी कर सकता है लेकिन यह हर समय तो नहीं हो सकता । इसलिये अमली दृष्टि से मेरा अनुभव ठीक है ।

धर्म है ज्ञान । यह ज्ञान कि वह एक अस्तित्व है और वह अनन्त है । मैं उसकी खोज में निकला था । खोज का परिणाम यह निकाला कि उसका कोई अन्त नहीं है । उसकी मौज आधीन रहकर संसार में बेफिक्र और बेगम रहना ही फकीरी है । यही इष्ट पद है । इसी को जीवन मुक्त अवस्था कहते हैं । इसकी विदेह गति कहते हैं । शेष सब माया का जाल है । मगर जब तक यह जाल नहीं टूटता जीव इसको सच्चा समझकर इसमें आनन्द लेता रहता है ।

भूला भटका काल माया ने, किया मेरा अकाज ।
मिल गये सतगुरु छुटा जन्मों का सारा है भरम ॥

अब मैं समझ गया कि कैसा आवागवन है । जीवन क्या है ? 'जब खुले और बन्द हुये ।' यह जन्म मरण एक भ्रम था । जीवन बनता है और समाप्त हो जाता है । वह एक समुद्र हैं लहराता रहता है । कभी शान्त हो जाता है । उसी का सारा खेल है । अफसोस कि

बाणी असली भाव को प्रगट नहीं करती। इसलिये संतों ने कहा है:-

यह करनी का भेद है, नाहीं बुद्धि विचार।
कथनी तज करनी करे, तब पावे कुछ सार॥
सैकड़ों पोथी पढ़ीं, निकला न कोई मेरा काम।
गुरु की संगत पाई तब, सूझा ठिकाने का मरम॥

बहुत पुस्तकें पढ़ीं। दातादयाल जी महाराज के पास गया। उन्होंने अनुभव करने के लिये मुझे गुरु पदवी दी। आंखें खुल गईं। अब सत्संगियों को सतगुरु समझकर नमस्कार करता हूं।

धन्य सतगुरु राधास्वामी, धन्य महिमा आपकी।
हो दया सुमिरन भजन और ध्यान मेरा हो नियम॥

अब उसकी दया होगई और मुझे ज्ञान होगया। अब यही प्रार्थना है कि इसमें आरूढ़ हो रहूँ। जिस अवस्था का मुझे अनुभव हुआ है अब इसमें मेरा अमली जीवन बन जाय।

शोक समाचार

मेरी धर्मपत्नी ता० ५—५—७२ को स्थूल शरीर को छोड़ कर परलोक चली गईं। इससे परिवार को सदमा पहुँचा ही है। इसमें हमारे बहुत से भाइयों ने अपनी-अपनी समवेदना प्रगट करते हुये दिवंगत आत्मा की शान्ति की मालिक से प्रार्थना की है। मैं उनको उत्तर देकर व्यक्तिगत रूप से उनका आभार प्रगट नहीं कर सका हूँ किन्तु सब भाइयों का आभारी हूँ।

—देवीचरन मीतल

दयाल फकीर कृत पुस्तकों की सूची

धर्म प्रकाश हिन्दी	-७५	नाम दान	१-००
जीवन उर्फ हिन्दी	१-००	सार का सार भाग १,२	२.७५
जन रहस्य उर्दू	-७५	मानवता युग धर्म	.५०
य बनो हिन्दी	-७५	निष्कलंक अवतार हिन्दी	.५०
त कल्याण हिन्दी	-७५	मानव कल्याण भाग १,२,३,४,५	५ ००
जगत उभार	१-००	गरुण पुराण रहस्य	१.००
आकाशीय रचना	.५०	अद्भुत मोती	.७५
फकीर वचनामृत	.४०	आजादी की कुंजी	.४०
राधास्वामी शताब्दी पर मेरी भेट		गुरु वन्दना	.६५
भाग १—२	२-२५	कबीरसार शब्द व्याख्या	१.००
कर्मभोग या मौज भाग १,२,	१-७५	शिव फकीर पत्रावली	१.२५
५० वर्षीय फकीर अनुभव	.५०	हृदय उद्गार	१.००
संत सतगुरु बक्त	१-५०	अगम वाणी भाग १,२,३ प्रति	१.००
उन्नति मार्ग	-२५	सुरत शब्द योग	१.००
विश्व धर्म भाग १ व २	१-७५	सत सनातन धर्म अथवा—	
गुरु महिमा	१-००	सत मानव धर्म	३.००
अजायब पुरुष	१-००	निर्वाण से परे	१.००
मेरा ८३ वर्षीय अनुभव	१-२५	रचना का भेद	.७५
आदि अन्त	१-२५	बेहद्दी या अपार के परे	१)२५
सारतत्व सचाई और शान्ति	१.००	ईश्वर दर्शन	१)
अगम विकाश	१-००	मेरी धार्मिक खोज	१.२५
सतज्ञान दाता भाग १, २	२·००	अपार के परे	१·२५
ज्ञान योग	१·००	बारहमासा की व्याख्या	•१·००

महर्षि शिवव्रतलाल कृत पुस्तकों की सूची

महर्षि शिव की जीवनी उर्दू	५.००	मूर्ति पूजा रहस्य	०.२५
दयाल योग ,,	२.५०	सत्य सनातन आर्य धर्म	१.२५
विवेक कल्पद्रुम	१.५०	रहिमन नीति दोहावली	.५०
सफलता के साधन हिन्दी	.५०	योग आसन	.२५
अन्तर्मुखी	.५०	सप्त ऋषि वृतान्त	.७५
मर्म सन्देश	.५०	राजस्थान की ललित ललनायें	१.००
गुप्त रहस्य	१.००	सत्संग के ८ वचन	०.७५
जैन वृतान्त	.७५	पाँच नाम की व्याख्या	१.२५
नवजीवन सुधार	,७५	हितोपदेश	.५०

RKS
VADA
RADHASWAMY DAYAL KI DAYA RADHASWAMY SAHAY
PURNADAYAL